1 शमूएल

1 इफ्राईम के पहाड़ी इलाके के रामातैम
सोपीम नामक नगर में एक व्यक्ति था।
उसका नाम एल्काना था। उसके पिता का
नाम और दादा का नाम तोहू था। 2 उसने
दो पत्नियाँ रखी थीं। उन में से एक हन्ना
और दूसरी पनिन्ना थी। हन्ना के पास कोई
बेटा न था, लेकिन पनिन्ना के पास था। 3 हर
साल एल्काना शीलो में जाकर मेल बलि
चढ़ाया करता था। वहीं एली के दो बेटे होप्नी
और पीनहास रहा करते थे। वे दोनों पुरोहित
थे। 4 मेल बलि चढ़ाने के दौरान वह पनिन्ना
और उसके बेटियों को ईनाम दिया करता
था। 5 हन्ना को वह दो गुना ईनाम देता था,
क्योंकि वह उस से ज़्यादा मोहब्बत रखता
था। वह बाँझ थी, 6 इसलिए उसकी सौत उसे
चिढ़ाया करती थी। 7 हर साल जब-जब हन्ना
प्रभु के प्रार्थना भवन में जाती थी, पनिन्ना उसे
चिढ़ाया करती थी। इस वजह से हन्ना रोती
रहती थी और खाना नहीं खाती थी। 8 एक
दिन एल्काना बोला,“हन्ना तुम क्यों दुखी हो,
क्या मैं तुम्हारे लिए दस बेटों से बढ़ कर नहीं
हूँ? 9 तब हन्ना ने खाना खाया। वहीं चौखट
के पास एली पुरोहित कुर्सी पर मन्दिर के
पास बैठा हुआ था। 10 वह रोते -बिलखते
हुए गिड़गिड़ाने लगी। 11 उसने यह वायदा
किया कि यदि प्रभु उसे एक बेटा दें, तो वह
उसे प्रार्थना भवन में सेवा के लिए अलग
करेगी। और उसके सिर पर उस्तरा तक नहीं
चलेगा 12 इस वक्त एली हन्ना को देख रहा
था। 13 उसके मुँह से कुछ शब्द न निकल
रहे थे लेकिन केवल ओठ हिल रहे थे। एली
ने सोचा कि वह नशे में है। 14 एली बोल
उठा,“तुम नशे में कब तक रहोगी।” 15 हन्ना
ने कहा,“स्वामी, मैं दुखियारी हूँ। मैंने न शराब
पी है न दाखममधु लिया है। अपने मन को मैंने
प्रभु के सामने खोल कर रख दिया है। 16 मैं
बाजारू औरत नहीं हूँ, जो कुछ मैंने कहा है,
वह इसलिए कि मेरा मन बहुत दुखी रहता
है। 17 एली बोला, “जाओ खुश रहो, प्रभु
तुम्हारी चाहत को पूरा करें। 18 हन्ना बोली,
“मैं प्रभु की भलाई चखने पाऊँ।” यह कह
कर वह चली गयी, उस दिन से वह खाना
खाने लगी और निराश न रही। 19 अगले दिन
बड़े सवेरे वे उस जगह को छोड़ कर अपने
गाँव रामा को चल दिए। एल्काना का उसके
साथ सम्बन्ध हुआ और प्रभु ने उसे याद
किया 20 कुछ समय बाद वह गर्भवती हुयी
और समय पूरा हो जाने पर उसने एक बेटे
को जन्म दिया। उसने उस का नाम शमूएल
रखा। उस का कहना था कि मैंने प्रभु से मांगा
और पा लिया। 21 इसके बाद ही एल्काना
अपने पूरे परिवार के साथ अपनी वार्षिक
भेंट चढ़ाने के लिए गया। 22 हन्ना एल्काना
के साथ नहीं गयी और कहा, कि दूध छूटने
के बाद वह बेटे को ले जाएगी और वहीं उसे
सेवा के लिए अर्पण कर देगी। 23 एल्काना ने
भी उसकी बात मान ली और वह घर पर ही
रही। 24 दूध-छुड़ाने के बाद वह तीन बछड़े,
एपा भर आटा, एक बोतल दाखमधु, और
लड़के को साथ लेकर शीलो पहुँचा दिया।
25 एली के पास बच्चे को और बलि को पहुँचा
दिया गया। 26 हन्ना बोली, “हे प्रभु सचमुच मैं
वही महिला हूँ जो एक दिन यहाँ अपना दुख
रो रही थी। 27 यही वह बालक भी है जिसे मैंने
मांगा था और प्रभु ने दिया भी। 28 इसीलिए
अब मैं इसे इस बात के लिए अलग करती

हूँ कि वह हमेशा तक प्रभु ही का रहे।" वहीं
हन्ना ने दण्डवत् किया।

2 हन्ना की प्रार्थना थी, "मेरा मन खुश
है प्रभु के कारण मेरी शक्ति बढ़ गयी
है। मेरे दुश्मनों के खिलाफ़ मैं अब बोल
सकती हूँ, क्योंकि आप से मिली प्रार्थना के
जवाब से मैं खुश हूँ। 2 प्रभु की तरह अनूठा
और कोई नहीं। हमारे प्रभु की तरह कोई
मजबूत आधार वाला प्रभु नहीं है। 3 घमण्ड
और अन्धेर की बातें न करो, क्योंकि वह
अक्लमन्द हैं। वह कामो को तौलते हैं।
4 ताकतवरों के धनुष टूट गए। ठोकर खाने
वालों की कमर में शक्ति की पेटी कसी गई।
5 पेट भरने वालों को मजदूरी करनी पड़ी।
भूखों को फिर भूखा न रहना पड़ा। बाँझ
महिला के सात बच्चे पैदा हुए। दूसरी तरफ
जिस के पहल ही से तमाम बच्चे हैं, वह दुख
में रहती है। 6 प्रभु मारते -जिलाते हैं। वही
अधोलोक में डालते और निकालते हैं। 7 वह
गरीब बनाते हैं, और धनी भी। वही ऊँचा
- नीचा करते हैं। 8 वह गरीब को धूल में से
उठा लेते हैं और घूरे से उठाकर खड़ा कर देते
हैं, ताकि उनको बड़े अधिकारियों के साथ
बैठाए और शानदार तख्त पर बैठाएँ।पृथ्वी
के खम्भे परमेश्वर के हैं, जिस पर जगत को
खड़ा किया गया है। 9 अपने मानने वालों
के पैरो को वह सम्भालते हैं। लेकिन प्रभु
से खाली लोग अन्धेरे की खामोशी में पड़े
रहेंगे। अपनी ताकत से कोई इन्सान जीत
न सकेगा। 10 जो सर्वशक्तिमान से झगड़ेंगे
वे चूर-चूर हो जाएँगे। उनके खिलाफ़ वह
आकाश में गरजेंगे। वह दुनिया के कोने तक
इन्साफ करेंगे। वह अपने राजा को ताकत
देंगे। अपने अलग किए हुए व्यक्ति की शक्ति
को बढ़ाएँगे। 11 इसके बाद एल्काना रामा
गया, जहाँ उस का घर था। वह बच्चा एली
के देख-रेख में सेवा करने लगा। 12 एली के
बेटे बुरे थे। वे प्रभु को नहीं जानते थे। 13 उन
दिनों मेल बलि चढ़ाने के समय पुरोहित
का सेवक एक काँटा रखता था। 14 जितना
माँस काँटे में लग जाता था। वह पुरोहित
ले लेता था। 15 इसके पहले कि चर्बी को
जलाया जाए वह पुरोहित के लिए भी कच्चा
माँस मांगता था। 16 वह इन्तज़ार न करके
ज़बरदस्ती किया करता था। 17 इसलिए यह
बात प्रभु को अच्छी न लगी, क्योंकि ये
सेवक प्रभु की भेंट को तुच्छ जानते थे।
18 उधर शमूएल ईमानदारी से सेवा में लगा
था। 19 हर साल मेलबलि चढ़ाने के लिए
आने के साथ वह उसके लिए पहनने को
लाया करती थी। 20 एली ने कहा,"तुमने जो
यह बालक सेवा के लिए दिया है, इसके
बदले प्रभु तुम्हें दें। यह सुनने के बाद वे चले
गए। 21 आने वाले समयों में हन्ना ने तीन बेटों
और दो बेटियों को जन्म दिया। और शमूएल
प्रभु के सामने बढ़ता चला गया 22 एली बहुत
बूढ़ा हो चला था। उसने सुना कि उसके बेटे
महिलाओं से गैर कानूनी यौन सम्बन्ध बना
रहे हैं। 23 एली ने उन से कहा, "मैं यह सब
क्या सुन रहा हूँ? 24 उसने यह सब करने
को मना किया और बताया कि यह प्रभु के
खिलाफ़ गुनाह है। 25 वह बोला,"एक इन्सान
के खिलाफ़ अपराध करने से ज़्यादा प्रभु के
खिलाफ़ करना है। ऐसे व्यक्ति के लिए कौन
बिनती करेगा ?" इन बेटों ने पिता की नहीं
सुनी इसलिए प्रभु ने उन्हें मार डालना चाहा।
26 दूसरी ओर शमूएल बढ़ता गया। प्रभु और
लोग सभी उस से सन्तुष्ट थे। 27 इसी दौरान
परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर
कहने लगा "प्रभु का कहना यह है कि जब
इस्राएली(तुम्हारे पुरखा) मिस्र में गुलाम थे,

तब क्या मैंने अपने आप को प्रगट नहीं किया
था। 28 क्या मैंने फिरौन के वंश को पुरोहित
पद के लिए अलग नहीं किया था ताकि
कुर्बानी आदि चढ़ाएँ ? 29 इसलिए मेलबलि
और अन्नबलि जिन्हें मेरे लिए चढ़ाया जाता
है, तुम उसे तुच्छ जानते हो। तुम मेरे से
ज़्यादा अपने बेटों को इज़्ज़त देते हो। तुम
लोग मेरी प्रजा की बढ़िया कुर्बानी की वस्तु
को खा-खाकर मोटे हो रहे हो। 30 इसलिए
हालाँकि, मैंने कहा था, कि तुम्हारे मूलपूरूश
और तुम्हारा परिवार सदा के लिए बना
रहेगा। लेकिन ऐसा न होगा। जो मुझे इज़्ज़त
दे, मैं उसे दूँगा। जो मुझे तुच्छ जाने, मैं उसे
तुच्छ समझूँगा। 31 एक समय आएगा कि मैं
तुम्हारी और तुम्हारे मूल-पुरुष की ताकत
तोड़ डालूँगा। कोई भी तुम्हारे परिवार में बूढ़ा
न हो सकेगा। 32 चाहे इस्राएली लोग अच्छे
से रहें, तुम्हारे घर में दुख रहेगा। 33 मैं तुम्हारे
कुल में से पूरी तरह से कुर्बानी चढ़ाने के काम
को न लूँगा, लेकिन तुम देखते रह जाओगे,
दुखी होंगे और जवानी में तुम्हारे बच्चे चल
बसेंगे। 34 तुम्हारे बेटों की एक ही दिन में मौत
इस बात का निशान होगी। 35 अपने लिए मैं
एक ईमानदार पुरोहित रखूँगा, जो मेरी पसन्द
से काम करेगा। मैं उसके घर को आबाद
करूँगा। मेरे अभिषिक्त के आगे -आगे वही
हमेशा चला करेगा। 36 जो तुम्हारे परिवार में
बचा रहेगा, वह उसी के पास जाकर एक
छोटे से चान्दी के टुकड़े तथा एक रोटी के
लिए सिज़दा करके कहेगा,“मुझे पुरोहित के
किसी काम में लगा लो, जिस से मुझे कुछ
खाने को मिल जाए।”

3 बालक शमूएल अपनी सेवा में लगा
रहा उन दिनों प्रभु ज़्यादा किसी से बात
नहीं किया करते थे।और दर्शन नहीं होते
थे। 2 एली को आँखों से साफ़ नहीं दिखता
था। 3 एक दिन दीपक बुझाया नहीं गया
था और मन्दिर में प्रभु के बक्से के पास
शमूएल लेटा हुआ था। 4 तभी प्रभु ने शमूएल
को आवाज़ लगाई,“वह बोला क्या प्रभु जी
?” 5 वह दौड़ कर एली के पास गया और
बोला,“क्या आपने मुझे आवाज़ लगाई ?”
उसने कहा,“नहीं तो। जाओ सो जाओ।”
6 एक बार फिर प्रभु ने उसे पुकारा 7 उस समय
तक उसे प्रभु का सही ज्ञान नहीं था, न ही प्रभु
ने तब तक उस से बातें की थी। 8 तीसरी बार
फिर प्रभु ने आवाज़ लगायी। वह फिर से एली
के पास गया। एली समझ गया कि बच्चे को
प्रभु पुकार रहे हैं। 9 इसलिए एली शमूएल से
बोला, “यदि तुम बुलाने की आवाज़ फिर से
सुनो तो कहना, “कहिए प्रभु जी मैं सुनने को
तैयार हूँ।” इसके बाद शमूएल अपनी जगह
जाकर सो गया। 10 फिर से प्रभु ने उसे पुकारा,
“शमूएल, शमूएल।” शमूएल ने जवाब में
कहा,“कहिए आप क्या कहना चाहते हैं ?
11 वह बोले, “मैं इस्राएल में एक ऐसा काम
करूँगा, जिस से सब घबरा जाएँगे। 12 उस
दिन मैं उन बातों को पूरा करूँगा जो एली
के खानदान के बारे में जा चुकी है” 13 मैंने
उसे बता दिया, कि मैं उसके गलत कामों
की सज़ा दूँगा ,क्योंकि उसने अपने बेटों को
गलत काम करते समय न रोका इसलिए मैंने
उसके परिवार के बारे में इरादा कर लिया है
कि कोई कुर्बानी उन्हें सज़ा से मुक्त न कर
सके।” 14 .इसलिये मैंने एली के परिवार के
बारे में प्रण कर लिया है कि उसके परिवार के
गलत कामों के दण्ड से छुटकारा किसी बलि
चढ़ाने से हो सकेगा । 15 सुबह तक शमूएल
लेटा रहा । इसके बाद उसने दरवाजा खोला।
वह एली को यह सब बताने से डर रहा था।
16 तब एली ने उसे पास बुलाया और पूछा,

17 "कौन सी बात है, जो तुम्हारे मन में है, और
तुम बताना नहीं चाहते हो।" 18 तब उसने सब
कुछ उसे बता दिया। एली ने कहा, "ठीक है
प्रभु को जो सही लगे, वह करें। 19 शमूएल
धीरे-धीरे बड़ा होता गया। प्रभु उसके संग
थे और उसकी किसी बात को टाला नहीं।
20 दान से बेर्शबा तक के लोगों को एहसास
हो गया कि प्रभु ने उसे नबी होने के लिए
अलग किया है। 21 शीलो में फिर से प्रभु ने
शमूएल से बातचीत की।

4 शमूएल का संदेश सारे इस्राएल के पास
पहुँचा। इस्राएली पलिश्तियों से युद्ध
करने निकल पड़े। एबेनेज़ेर के आस पास
उन्होंने छावनी डाली। 2 पलिश्ती भी तैयारी
से आ गए। घमासान युद्ध हुआ और इस्राएली
उन से हार गए। लगभग चार हज़ार इस्राएली
फ़ौजी मारे गए। 3 उनके छावनी में वापस
लौटने पर बुजुर्ग लोगों ने कहा,"हमे प्रभु ने
क्यों हरा दिया ? आओ हम शीलो से प्रभु
बक्से को ले आएँ, ताकि हम अपने दुश्मनो
से बच सकें। 4 ऐसा किया भी गया। उसके
साथ एली के दोनों बेटे होप्नी और पीनहास
भी वहाँ थे। 5 बक्से के आते ही एस्त्राएली
खुशी से चिल्ला उठे। 6 इस आवाज़ को सुनकर
पलिश्ती सवाल करने लगे, कि आखिर इस
जयजयकार का कारण क्या है। तभी उनको
मालूम पड़ा कि प्रभु की वाचा का बक्सा वहाँ
लाया गया है। 7 वे सभी डर गए और कहने
लगे, "हाय-हाय, ऐसा इससे पहले कभी नहीं
हुआ था। 8 हाय! ऐसे शक्तिशाली प्रभु से हमें
कौन बचाएगा ? इन्हीं ने जंगल में मिस्री लोगों
पर कहर बरपा था। 9 हे पलिश्ती लोगो,
हिम्मत रखो और आगे बढ़ो। कहीं ऐसा न
हो कि जिस तरह इब्री लोग तुम्हारे वश में
हो गए थे, उसी तरह तुम भी उनके वश में हो
जाओ। आगे बढ़ो, लड़ो। 10 तभी पलिश्तियों
ने हमला बोल दिया और इस्राएलियों को मुँह
की खानी पड़ी। उस दिन तीस हज़ार पैदल
इस्राएली फ़ौजी खत्म हो गए। 11 तभी प्रभु
का बक्सा छीना गया। उसी दिन एली के
दोनों बेटों का भी देहान्त हुआ। 12 तभी एक
बिन्यामीनी ने अपने सिर पर मिट्टी डाली,
कपड़े फाड़े और दौड़ कर शीलो पहुँचा।
13 उस समय एली प्रभु के बक्से के कारण
काँप् रहा था। वह कुर्सी पर बैठा हुआ था।
जैसे ही उस आदमी ने खबर दी, पूरा शहर
चिल्ला पड़ा। 14 इस चिल्लाने की आवाज़ को
सुनकर एली ने पूछा, "यह हुल्लड़ क्या है?
उस आदमी ने सारा हाल एली को बता दिया।
15 एली की उम्र उस समय अट्ठानवे साल
थी और आँखों से ठीक नहीं दिखता था।
16 वह आदमी बोला, "मैं फ़ौज में से भाग कर
आया हूँ।" 17 उसने खबर दी कि इस्राएली
पलिश्तियों से डर कर भाग खड़े हुए हैं। बहुत
से लोग मारे गए है। तुम्हारे दोनों बेटे नहीं
रहे और प्रभु का बक्सा छीना जा चुका है।
18 बक्से का नाम उसने लिया ही था कि एली
पछाड़ खा कर गिरा और दम तोड़ दिया।
एली चालीस साल (एकलम्बे अर्से) तक
इस्राएल में इन्साफ़ करता रहा था। 19 उसकी
बहू और पीनहास की पत्नी उन दिनों में
गर्भवती थी और जैसे ही उसने पति और
ससुर के मरने का समाचार सुना, उसने बच्चे
को जन्म दिया। 20 उसके मरने के समय, वहाँ
खड़ी महिलाओं ने उसे बताया कि उसने एक
बेटे को जन्म दिया है। 21 उसने प्रभु के बक्से
के छीने जाते और ससुर तथा पति के मर
जाने के कारण उसका नाम इकाबोद रखा।
22 वह बोली, "प्रभु का बक्सा छीने जाने के
कारण इस्राएल में ही प्रभु की मौजूदगी जाती
रही है। "

5 पलिश्ती लोग उस बक्से को एबेनेज़ेर
से लाए और अश्दोद पहुँचा दिया।
2 पलिश्ती बक्से को उठा ले गए और दागोन
के मन्दिर में रखा। 3 सुबह जब अश्दोदी
लोग उठे तो देखा कि बक्से के सामने दागोन
की मूर्ति पड़ी हुयी है। तब उन लोगों ने उसे
उठा खड़ा किया। 4 अगले दिन सुबह फिर
वही नज़ारा -दागोन औंधे मुँह गिर पड़ा था।
उसकी हथेलियाँ और सिर कटा पड़ा था।
उसका धड़ समूचा था। 5 इसीलिए जितने
लोग उस मन्दिर में आया करते थे, वे आज
तक चौखट पर पाँव नहीं रखते थे। 6 इसके
बाद प्रभु को अश्दोदियों पर गुस्सा आया।
उन्होंने वहाँ और आस-पास के लोगों को
गिलटियाँ निकालीं और लोग मरने लगे।
7 इस हालत को देखकर अश्दोद के लोग
बोल उठे,“हमारे बीच इस्राएली देवता नहीं
होने चाहिए। वह हमारे देवता को और हमें
बर्बाद करने पर तुले हुए हैं। 8 तब उन लोगों
ने सभी अगुवों को बुलवाया और पूछा,
“हम इस्राएल के ईश्वर के साथ क्या करें?
उन्होंने कहा, “इस्राएल के ईश्वर के बक्से
को घुमाकर गत नगर में ले जाया जाए।”
इसलिए ऐसा ही किया गया। 9 घुमा कर
वापस पहुँचाने पर प्रभु का गुस्सा उस नगर के
खिलाफ़ भड़क उठा। इसलिए वहाँ हलचल
मच गई। काफी लोग वहाँ मारे गए और
उनके टयूमर निकल आए। 10 तब उन्होंने
प्रभु के बक्से को एक्रोन भेजा। जैसे ही वह
वहाँ पहुँचा, वैसे ही वे चिल्लाए, “ऐसा हमें मार
डालने के लिए किया गया है।” 11 तब उन्होंने
पलिश्तियों के सभी अगुवों को एक जगह
लाकर कहा, “हमें बचाने के लिए ज़रूरी है
कि इस्राएल के ईश्वर को यहाँ से ले जाया
जाए।” 12 जो मरे नहीं थे वे बीमारी में तड़पते
रहे और लोगों का चीखना -चिल्लाना आकाश
तक पहुँच गया।

6 सात महीने तक प्रभु का बक्सा
पलिश्तियों के देश में रहा। 2 फिर
पलिश्तियों ने पुरोहितों और भविष्य बताने
वालों से पूछा कि प्रभु के बक्से के साथ
क्या किया जाए। 3 वे बोले कि वापस भेजने
के लिए तुम्हें दोष बलि देना पड़ेगा। तब
तुम लोग अच्छे हो जाओगे। 4 उन्होंने उस
दोषबलि की पूरी जानकारी चाही। उन्हें
पलिश्ती सरदारों (प्रधानों’ की गिनती के
हिसाब से पाँच गिलटियाँ, पाँच सोने के चूहे
बनाने की सलाह दी, 5 “अपनी गिलटियों
और देश को बर्बाद करने वाले चूहों की
प्रतिमा बना कर इस्राएली ईश्वर के बड़प्पन
को मान लो। हो सकता है वह उस सज़ा
को जो तुम लोगों पर और तुम्हारे देश पर
है हटा ले। 6 तुम इतने ज़िद्दी क्यों बन गए
हो, जैसे फिरौन और मिस्री लोगों का हाल
था? जब उन्होंने अपने मन को दीन दिया
और अजीब काम देख, तब क्या गुलामी से
इस्राएली नहीं निकाले गए? 7 तुम अब एक
नयी गाड़ी बनाओ। दूध देने वाली दो दुधारी
गायें लाओ, जिन्हें कभी जुए में इस्तेमाल न
किया गया है। उन गायों को गाड़ी में जोतो
और उनके बच्चों को उनके पास से ले कर घर
वापस कर दो। 8 इसके बाद प्रभु का बक्सा
गाड़ी पर रखो। नुक्सान भरपाई के लिए जो
सोने की चीजें तुमने बनवायी है, उन्हें दूसरे
बक्से में रख कर वाचा के बक्से के पास
रखो। इसके बाद गायों को जाने देना। 9 नज़र
रखना, यदि गायें बेतशेमेश की ओर जाएँ, तो
समझ लेना, कि मुसीबत प्रभु की ओर से थी।
यदि नहीं, तो यह सबूत होगा कि यह मुसीबत

यों ही आई। 10 लोगों ने वैसा ही किया, जैसे
उन से कहा गया था। 11 और प्रभु का बक्सा,
दूसरा बक्सा सोने के चूहे की मूरत, गिलटियों
की मूरत आदि को गाड़ी पर रखा। 12 गायें
सीधी बेतशेमेश की दिशा में चल पड़ी। वे
इधर-उधर न मुड़ी। पलिश्ती अगुवे उनकी
पीछे-पीछे चलते गए। 13 उस समय बेतशेमेश
के लोग गेहूँ काट रहे थे। बक्से को देखते
ही वे खुशी से भर गए। 14 यह गाड़ी यहोशू
नाम के एक व्यक्ति के खेत में जा रूकी।
वहाँ पर एक बड़ा पत्थर रखा था।तब उन्होंने
लकड़ी को चीरा और गायों को होमबलि
करके चढ़ाया। 15 लेवियों ने दोनों बक्सों
को उतारा और पत्थर पर रखा। उसी दिन
बेतशेमेश के लोगों ने कुर्बानियाँ की। 16 यह
देखकर पलिश्तियों के पाँचों सरदार वापस
एक्रोन चले गए। 17 नुक्सान भरपाई के लिए
सोने की गिलटियाँ दोषबलि की शक्ल में
पलिश्तियों ने दी थीं। उन में से एक अश्दोद
दूसरी अज्जा, तीसरी अश्कलोन, चौथी गत
और पाँचवी एक्रोन की ओर से दी गयीं
थीं। 18 सोने के चूहे शहरपनाह वाले, बिना
शहरपनाह के गाँव, पलिश्तियों के पाँचो
सरदारों की संख्या के अनुसार दिये गये।
19 इस कारण कि बेतशेमेश के लोगों ने प्रभु
के बक्से के अन्दर झाँका था, उसने उनके
सत्तर पुरुष और पचास हज़ार लोगों को
मारा। वहाँ के लोग बड़े दुखी हुए, क्योंकि
प्रभु ने बड़ी तादाद में लोगों को मारा। 20 तब
बेतशेमेश के लोग बोल उठे, इस पवित्र प्रभु
का कोई सामना नहीं कर सकता। अच्छा
होगा यदि वह हमारे पास से चले जाएँ। 21 तब
उन्होंने किर्तत्यारीम में रहने वालों को यह
समाचार भेजा, कि पलिश्तियों ने प्रभु के
बक्से को लौटा दिया है, इसलिए तुम आओ,
और उसे ले जाओ।

7 तब किर्यत्यारीम के लोग गए और बक्से
को उठा कर अबीनादाब के घर में
रखा,जो ऊँचाई पर था। उसकी देख रेख
के लिए अबीनादाब के बेटे एलीआज़ार को
अलग किया। 2 बहुत समय (लगभग 20
साल) तक बक्सा वहीं रहा। इस्राएली रोते
गए और प्रभु के रास्ते पर चलने लगे और
प्रभु की खोज में लगे रहे। 3 तब शमूएल
ने इस्राएल के घराने (कुटुम्ब) से बोला,
“यदि तुम्हारे मन का पूरा बदलाव हुआ
है, तो दूसरे देवी-देवताओं को पूजना बन्द
करो। केवल प्रभु परमेश्वर का भजन कीर्तन
करो, तब वह तुम्हें पलिश्तियों से आज़ाद
करेंगे। 4 इसके बाद इस्त्राएलियों ने बाल
देवताओं और अश्तोरेत देवियों को हटा
दिया। वे लोग प्रभु की इबादत करने लगे।
5 फिर शमूएल बोला,“सभी इस्राएली मिस्पा
में इकट्ठे हों। वहाँ मैं तुम्हारे लिए बिनती
करूँगा।” 6 तब इस्राएली मिस्पा में जमा हुए।
वहाँ पानी भर कर उन्होंने प्रभु के सामने
पलट दिया। उन्होंने उस दिन कुछ खाया
नहीं। उन्होंने माना कि प्रभु की कही बातों
के खिलाफ़ उन्होंने किया था। वही मिस्पा में
शमूएल ने इन्साफ़ भी किया। 7 यह सुनकर
कि इस्राएली वहाँ इकट्ठे हुए हैं, पलिश्तियों
ने हमला बोल दिया। इस कारण इस्राएली
डर गए। 8 शमूएल से उन्होंने कहा,“तुम हमारे
लिए प्रार्थना करना रोकना नहीं, ताकि हम
बर्बाद न हो जाएँ। 9 शमूएल ने दूध पीते मेम्ने
को लिया और होम बलि चढ़ाया। साथ ही
उसने प्रार्थना भी की। जिसे प्रभु ने सुन लिया।
10 उसके कुर्बानी चढ़ाते समय ही पलिश्ती
इस्राएलियों से लड़ने आ गए। प्रभु ने उनके
ऊपर बादल गरजा कर डरा दिया। 11 तब
इस्राएली निकले और बेतकर तक मारते चले
गए। 12 तब शमूएल ने एक पत्थर लिया और

मिस्पा तथा शेन के बीच खड़ा किया। उसने
उस का नाम एबेनेज़ेर रखा (जिसका मतलब
है, 'यहाँ तक प्रभु ने हमारी मदद की है')
13 इसके बाद पलिश्ती उनके देश में नहीं
आए। शमूएल के जीने तक प्रभु पलिश्तियों
की नीचे दबाए रहे। 14 एक्रोन और गत जितने
नगर पलिश्तियों ने इस्राएलियों से छीन लिये
थे, वे इस्राएलियों ने वापस ले लिये।उनका
देश भी इस्राएलियों ने पलिश्तियों की गिरफ्त
से आज़ाद किया।इस्राएलियों और एमोरियों
के बीच मेल भी हो गया। 15 अपने पूरे जीवन
भर शमूएल इन लोगों का इन्साफ़ करता रहा।
16 हर साल वह बेतेल, गिलगाल और मिस्पा
घूम-घूमकर न्याय किया करता था 17 वापिस
वह रामा में आकर लोगों का न्याय किया
करता था। उसने वहाँ प्रभु के लिये एक वेदी
भी बनाई।

8 शमूएल के बूढ़े हो जाने पर, उसने
इस्राएलियों को इन्साफ़ करने का काम
अपने बेटों को दिया। 2 उसके बड़े बेटे का
नाम योएल और छोटे का अबिय्याह था। ये
लोग बेर्शेबा में न्याय किया करते थे। 3 ये बेटे
लालची हो गए।वे उसके सिखाए रास्ते पर
नहीं चलते थे वे लोग रिश्वत लेकर बेइन्साफ़ी
किया करते थे। 4 एक दिन बुज़ुर्ग लोग रामा
में इकट्ठे होकर शमूएल के पास पहुँचे। 5 वे
बोले,"सुनिए, आप तो काफी बूढ़े हो चुके हैं।
आपके बेटे सही रास्ते पर नहीं चल रहे हैं।
इसलिए जिस तरह हमारे आस-पास के देशों
में राजा है, हमारे यहाँ भी राजा ठहराईए।"
6 लेकिन उन लोगों की इस बात से शमूएल
नाराज़ हो गया। शमूएल ने प्रभु को सब कुछ
बता डाला। 7 प्रभु का जवाब था, "जैसा वे
लोग कह रहे हैं, वैसा ही करो। उन्होंने तुम्हें
नहीं, मुझे तुच्छ समझा है। वे मुझे अपना
राजा नहीं मानना चाहते हैं। 8 मिस्र की गुलामी
से निकाले जाने के बाद से वे मुझे छोड़कर
दूसरे देवी-देवताओं की पूजा में लगे रहे हैं।
9 तुम उनकी बात तो मान लो लेकिन यह सब
बतला दो कि राजा उनके साथ कैसा बर्ताव
करेगा। 10 शमूएल ने ऐसा किया भी। 11 उसने
यह भी बतलाया कि राजा तुम्हारे बेटों को
रथों और घोड़ों के काम पर नौकरी कराएगा।
उन्हें रथों के आगे-आगे दौड़ना भी पड़ेगा।
12 वह उनको हज़ार -हज़ार और पचास
-पचास के ऊपर अधिकारी ठहराएगा। वह
खेत जुताई-कटाई के साथ, युद्ध के हथियार
और साज़ भी बनवाएगा। 13 तुम्हारी बेटियों
से खुशबूदार पदार्थ और रसोई में खाना
बनवाएगा। 14 तुम्हारे खेतों, अंगूर के बगीचों
और जैतून के बगीचों में से अच्छी फसल
को लेकर वह अपने काम करने वालों को
दे देगा। 15 वह तुम्हारे बीज और अंगूर
के बगीचों का दसवाँ हिस्सा लेकर अपने
अधिकारियों और कार्य-कर्ताओं को देगा।
16 वह तुम्हारे दास-दासियों, अच्छे जवानों
और गदहों को भी अपने काम पर लगाएगा।
17 तुम्हारी भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा
वह ले लेगा। एक तरह से तुम लोग उसके
गुलाम रहोगे। 18 उस दिन दुखी होकर तुम
गिड़गिड़ाओगे। उस वक्त प्रभु तुम्हें जवाब
नहीं देंगे। 19 इसके बावजूद लोगों ने शमूएल
की बात न मानी और अड़े रहे कि उन्हें राजा
चाहिए। 20 वे दूसरे देशों की तरह होना चाहते
थे, ताकि वह इन्साफ़ करने के साथ युद्ध में
उनके आगे चले। 21 यह सभी कुछ शमूएल
ने प्रभु को बताया। 22 प्रभु ने कहा, "उनकी
बात मान लो।" तभी उसने कहा कि वे लोग
अपने-अपने घर चले जाएँ।

9 बिन्यामीन के कबीले में कीश नाम
का एक आदमी था। वह अपीह का

बेटे बकोरत का परपोता और सरोर का
पोता और अबीएल का बेटा था। वह एक
बिन्यामीनी आदमी का बेटा था। वह बहुत
बहादुर था। 2 शाऊल नाम का उसके पास
एक एक बेटा था। वह खूबसूरत था और
कोई उसकी बराबरी न कर सकता था।
उसकी ऊँचाई इतनी अधिक थी, कि दूसरे
उसके कन्धे तक भी नहीं आते थे। 3 एक
दिन शाऊल के पिता कीश की गदहियाँ
खो गई। कीश ने शाऊल से कहा,"अपने
नौकरों के साथ जाकर बेटा गदहियों को
ढूँढ लाओ।" 4 उसने पिता की बात मानी
और चल पड़ा। एप्रैम के पहाड़ी देश और
शालीशा में वे उसे न मिलीं। शालीम में भी
वे न मिलीं। 5 सूफ देश आने पर उसने अपने
नौकर से कहा, "चलो घर वापस जाएँ, कहीं
मरे पिता गदहियों को छोड़ हमारी चिन्ता
न करने लगे।" 6 नौकर बोला,"इस इलाके
में एक नबी रहता है, तहम उसके पास
चलते हैं। वह हमें रास्ता बता सकता है।
7 शाऊल अपने नौकर से बोला,"हम खाली
हाथ उसके पास कैसे जाएँ?" 8 सेवक ने
कहा,"मेरे पास एक शेकेल चाँदी का चैथाई
है, वहा हम उसे दे देंगे वही हमें रास्ता
दिखाएगा। 9 पुराने समयों में जब कभी कोई
इन्सान परमेश्वर से पूछने जाता था,तब वह
कहता था,' आओ, हम दर्शी के पास जाएँ'
, क्योंकि अभी जो नबी कहलाता है, उस
समय दर्शी कहलाता था 10 शाऊल राज़ी हो
गया और वे उसके घर की ओर चल पड़े।
11 चढ़ाई पर चढ़ते हुए वहाँ से गुज़रने वाली
उन लडकियों से उन्होंने पूछताछ की, जो
पानी भरने निकली थीं। 12 वे बोलीं,"जल्दी
करो, ऊँची जगह आज यज्ञ है, इसलिए वह
यहाँ आया हुआ है।" 13 जैसे ही तुम नगर
पहुँचोगे, वह तुम्हें मिलेगा। जब तक वह वहाँ
नहीं पहुँचता है, लोग खाना नहीं खाएँगे। वही
यज्ञ के लिए पहले धन्यवाद करेगा, उसके
बाद ही लोग खाना खाएँगे। 14 उन लोगों ने
वैसा ही किया और वहाँ पहुँचे। वहाँ उन्हें
शमूएल मिला। 15 शाऊल के वहाँ पहुँचने
से एक दिन पहले प्रभु ने उसे बता दिया
था, 16 कि बिन्यामीन के देश से एक आदमी
आएगा उसे इस्राएलियों पर राजा ठहराना।
यह भी कि पलिश्तियों के बन्धन से वही
उन्हें आज़ाद करेगा। मेरे लोगों की दोहाई
के कारण मैंने उन पर कृपा की है। 17 जैसे
ही शमूएल ने शाऊल को देखा, तभी प्रभु
ने बताया कि यही वह आदमी है, जिस के
बारे में मैंने तुम्हें कहा था। यही मेरी प्रजा
को चराएगा। 18 तब शाऊल फाटक के पास
शमूएल के पास जाकर कहने लगा, "मुझे
नबी का घर बताओ।" 19 वह बोला,"मैं ही
हूँ, तुम मेरे पहले ऊँचे स्थान पर मेरे साथ
खाना खाओगे। सुबह मैं वह सब कुछ बता
दूँगा, जो तुम्हारे मन में है। 20 तीन दिन पहले
तुम्हारी गदहियाँ खो गई थी; वे मिल गई हैं।
इस्राएल में कुछ अच्छा है क्या वह तुम्हारा
और तुम्हारे पिता के परिवार का नहीं है?
21 शाऊल बोला, "क्या हम सब से छोटे
कबीले के नहीं हैं? इसलिए तुम मुझ से
ऐसा क्यों कह रहे हो? " 22 तब शमूएल ने
शाऊल और उसके नौकर को न्योताहारियों
के साथ जो तकरीबन तीस थे, उन्हीं के
साथ खास जगह पर बैठाया। 23 इसके बाद
रसोईए से शमूएल ने कहा, "जिस टुकड़े
को मैंने तुम्हारे पास रखवाया था, वह ले
आओ।" 24 रसोइए ने वैसा किया भी इस
तरह शाऊल ने उनके साथ खाना खाया।
25 खाने के बाद वे लोग नीचे उतर कर आए
और घर की छत ही पर उनकी बातचीत
हुयी। 26 बड़े सवेरे वे लोग उठ गए। शमूएल

ने शाऊल को छत पर बुलाया और कहा,“मैं
तुम्हें विदा करता हूँ। तब दोनों बाहर निकल
गए।” 27 चलते -चलते शमूएल शाऊल से
बोला,“अपने सेवक को आगे जाने दो। फिर
मैं तुम्हें प्रभु का संदेश सुनाऊँगा।”

10 तभी शमूएल ने एक बोतल में से तेल
उसके सिर पर उण्डेल दिया। उसने
कहा,“क्या अपने लोगों के ऊपर शासन
करने के लिए तुम्हें अलग नहीं किया है ?
2 आज मेरे पास से जाने के बाद राहेल की
कब्र के पास जो बिन्यामीन की सरहद पर
सेलसह में है, तुम्हें दो व्यक्ति मिलेंगे। वे
कहेंगे, “जिन गदहियों को तुम ढूँढने गए थे,
वे मिल चुकी हैं। तुम्हारा पिता उन जानवरों
को छोड़ तुम्हारे बारे में परेशान है।” 3 फिर
जब तुम ताबोर पहुँचो, तब तीन जन प्रभु
के पास बेतेल जाते हुए मिलेंगे। उनमें से
एक बकरी के तीन बच्चे, दूसरा तीन रोटी
और तीसरा एक बोतल में दाख मधु लिए
होगा। 4 वे लोग तुम्हारा हाल-चाल पूछेंगे।
वे लोग तुम्हें दो रोटी देंगे, जिन्हें तुम ले
लेना। 5 तब तुम प्रभु के पहाड़ पर पहुँचेगे।
वहाँ पलिश्तियों की चौकी है। वहाँ नगर में
दाखिल होते ही तुम्हें एक नबियों का झुण्ड
मिलेगा। उनके आगे आगे सितार, डफ़,
बांसुली और वीणा बजाने वाले होंगे। वे लोग
नबूवत (स्तुति) करते जाएँगे। 6 तब प्रभु का
आत्मा तुम पर शक्ति के साथ उतरेगा। उनके
साथ मिलकर तुम भी नबूवत -(स्तुति) करने
लगोगे। तुम बदल कर एक अलग इन्सान
हो जाओगे। 7 जब तुम ये निशान देखो, तब
तुम्हें जो कुछ करने का मौका मिले, करने
लगना। प्रभु तुम्हारे संग होगा। 8 मुझ से पहले
तुम गिलगाल पहुँचना। मैं होमबलि और मेल
बलि चढ़ाने तुम्हारे पास आऊँगा। सात दिन
तक तुम मेरा इन्तज़ार करना। मेरे आने पर मैं
तुम्हें बताऊँगा, कि तुम्हें करना क्या है। 9 जैसे
ही शमूएल के पास से जाने के लिए वह मुड़ा
प्रभु ने उसके मन को बदल डाला। उसी दिन
वे सभी निशान पूरे भी हुए। 10 जब वे पहाड़
के पास आए, तब नबियों का हल उसे मिला
भी। प्रभु का आत्मा उस पर बड़ी ताकत के
साथ आया और वह प्रभु के आत्मा से प्रेरित
बातें कहने लगा। 11 उस को जानने वालो ने
जब देखा कि वह नबूवत कर रहा है, आपस
में कहने लगे,“कीश के बेटे शाऊल को हुआ
क्या, क्या वह भी नबियों में से एक है?”
12 वहाँ एक आदमी ने जवाब दिया, उसका
पिता कौन है? इस पर एक कहावत मशहूर
हो गई, कि क्या शाऊल भी नबियों में से
है? 13 नबूवत करने के बाद वह ऊँचे स्थान
पर चढ़ गया। 14 शाऊल के चाचा ने उससे
और उसके सेवक से सवाल किया,“तुम
लोग गए कहाँ थे?” वह बोला,“हम गदहियों
को ढूँढ रहे थे और न मिलने के बाद हम
शमूएल के पास गए थे। 15 शाऊल के चाचा
ने कहा, “मुझे बताओ कि शमूएल ने क्या
कहा।” 16 शाऊल ने जवाब में कहा,“उसने
हमें बताया कि गदहियों मिल चुकी हैं।”
लेकिन राज्य के बारे में जो शमूएल ने कहा,
वह सब न बताया। 17 तब शमूएल ने प्रजा
के लोगों को मिस्पा में इकट्ठे होने के लिए
कहा। 18 उसने इस्राएलियों से कहा, “प्रभु का
कहना है कि वह मिस्र से अपने लोगों को
निकाल कर लाए थे और सभी अन्धेर करने
वालों से छुड़ा कर लाए थे। 19 लेकिन जो
प्रभु तुम्हें सारी मुसीबतों से बचाते हैं, तुम उन्हें
चाहते नहीं हो। अब तुम कबीले-कबीले और
हज़ार-हज़ार करके, प्रभु के सामने खड़े हो
जाओ।” 20 तब शमूएल सभी इस्राएली गोत्रों
को पास में लाया। उस वक्त चिट्ठी बिन्यामीन

के नाम पर निकली। 21 तब वह बिन्यामीन
के कबीले को सामने लाया। तब चिट्ठी मंत्री
के कुल के नाम पर निकली। उसे ढूँढा गया,
लेकिन वह मिला नहीं। 22 तब वे लोग प्रभु
से पूछने लगे कि वहाँ क्या कोई और भी
आएगा। उन्हें जवाब मिला, कि वह सामान
के बीच छिपा हुआ है। 23 बिना देरी किए
वे वहाँ गए और उसे ले आए। ऊँचाई में
वह सभी से अधिक था। 24 शमूएल लोगों
से बोला,"क्या तुमने प्रभु के चुने व्यक्ति को
देखा है। उसकी तुलना किसी से नहीं की जा
सकती है। तभी सभी ज़ोर से चिल्लाए,"राजा
जीवित रहे।" 25 तब शमूएल ने लोगों को देश
के प्रशासन प्रबन्ध के बारे में सिखाया। बाद
में सभी को घर जाने दिया।उन बातों को एक
किताब में लिख कर प्रभु के सामने रखा।
26 शाऊल अपने घर गिबा को चल दिया।
उसके साथ एक लोगों का झुण्ड था, जिनके
मन को प्रभु से प्रेरणा मिली थी। 27 फालतू
बात करने वाले लोग भी वहाँ थे, वे बोले,
"यह हमें कैसे छुड़ाएगा।" उसे नीची निगाह
से देखने के साथ ही वह उसके लिए कुछ
ईनाम भी न लाए। फिर भी शाऊल ने इसे
हल्की फुल्की बात जाना।

11 अम्मोनी नाहाश ने एक दिन गिलाद
के याबेश के खिलाफ़ छावनी
डाली। याबेश के सभी आदमी उससे बोले,
तुम हमारे साथ सहमति (वाचा) कर लो और
हम तुम्हारे अधीन रहेंगे। 2 नाहाश का कहना
था कि वह इसी शर्त पर ऐसा करेगा कि
वह पहले सभी की आँखें फोड़ डालेगा।
3 याबेश के बूढ़े लोगों ने कहा,"हमें सात दिन
की मोहलत दो। हम पूरे इस्राएल में संदेश
वाहक भेजेंगे। यदि हमको बचाने वाला कोई
नहीं मिलेगा, तो हम तुम्हारे पास वापस
आएँगे। 4 संदेशवाहकों के भेजे जाने पर लोग
ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। 5 उसी वक्त शाऊल
बैलों के पीछे -पीछे चला आ रहा था। लोगों
के रोने का कारण पूछे जाने पर उसे याबेश
के लोगों का जवाब बताया गया। 6 इतना
शाऊल ने सुना ही था कि प्रभु का आत्मा
उस पर उतरा और उसका गुस्सा भड़क
गया। 7 उसने एक जोड़ी बैल लेकर उन्हें
काटा और यह कह कर इस्राएल के देश में
भेजा, कि जो कोई शाऊल और शमूएल की
अधीनता में नहीं रहेगा, उसके साथ यही हाल
किया जाएगा। तब वे सभी डर गए और एक
मन हो कर निकल आए। 8 बेज़ेक में उनकी
गिनती की गयी और इस्राएलियों के तीन
लाख तथा यहूदियों के तीस हज़ार थे। 9 उन
संदेश-वाहकों से उन लोगों ने कहा, "गिलाद
के याबेश वासियों से कहो कल दोपहर
तक तुम लोग आज़ाद हो जाओगे।" यह
समाचार याबेश के लोगों को जैसे ही मिला,
वे बहुत खुश हुए। 10 फिर याबेशवासी बोले,
"कल तुम्हारे पास आएँगे और तुम्हें जो भाए,
वही करना। 11 दूसरे दिन शाऊल ने लोगों
के तीन झुण्ड बनाए। उन लोगों ने देर रात
में छावनी में जाकर अम्मोनियों को हताहत
किया। धूप तेज होते-होते वे मारते गए और
लोग तित्तर-बितर हो गए। 12 तब लोगों ने
शमूएल से कहा, "जिन लोगों ने सवाल किया
था, कि क्या शाऊल हम पर शासन करेगा,
उन्हें यहाँ लाया जाए ताकि उन्हें मार डाला
जाए।" 13 शाऊल ने कहा,"आज किसी की
जान नहीं ली जाएगी, क्योंकि आज प्रभु ने
इस्राएलियों को छुड़ाया है।" 14 फिर शमूएल
ने कहा,"चलो, हम गिलगाल जाएँगे। वहाँ
राज्य को नई रीति से बनाएँगे।" 15 सब ने

ऐसा किया और गिलगाल में शाऊल को राजा बना लिया। वहीं पर उन्होंने मेलबलि चढ़ाए। वहीं उन लोगों ने जश्न मनाया।

12 तब शमूएल ने सभी इस्राएलियों से कहा,"तुम्हारे कहने के अनुसार मैंने तुम्हारे लिए राजा ठहरा दिया है। 2 यह राजा तुम्हारी अगुवाई करेगा। मैं बूढ़ा हो रहा हूँ और मेरे बाल पक रहे हैं। मेरे बेटे तुम्हारे साथ हैं। तुम्हारे सामने मैं बचपन से काम करता आ रहा हूँ। 3 मैं अभी हूँ इसलिए प्रभु और उनके अलग लिए हुए (अभिषिक्त) के सामने गवाही दो कि मैंने क्या किसी का बैल या गदहा लिया? मैं ने क्या किसी का शोषण किया, अन्धेर किया या घूस ली? यदि ऐसा है, तो मैं लौटा दूँगा। 4 उन्होंने कहा, "तुमने ऐसा कुछ नहीं किया।" 5 वह बोला, "आज के दिन प्रभु तुम्हारे गवाह हैं और उनका अभिषिक्त इस बात का गवाह है कि मुझ पर कुछ नहीं आता है। वहाँ खड़े लोगों ने भी हाँ में जवाब दिया। 6 फिर शमूएल कहने लगा, "मूसा और हारून की अगुवाई में मिस्र की गुलामी से छुड़ाने वाले प्रभु ही हैं। 7 इसलिए अब तुम खड़े रहो और मैं प्रभु के सामने उनकी भलाई के कामों के बारे में, जिन्हें उन्होंने तुम्हारे साथ और तुम्हारे से पहले हुए लोगों के साथ किए, उन पर सोचूँगा। 8 याकूब के मिस्र में आने के बाद गया था, सभी इस्राएली गिड़गिड़ाए थे। तब प्रभु ने उनके उत्तर में मूसा और हारून को भेजा। उन दोनों ने इस्राएलियों को बाहर निकाला और यहीं बसाया। 9 इसके बाद ये लोग प्रभु को भूल गए और प्रभु ने उन्हें हासोर के सेनापति सीसरा और पलिश्तियों, तथा मोआब के राजा के वश में कर दिया। 10 तब फिर से वे प्रभु से गिड़गिड़ाए, "प्रभु परमेश्वर को छोड़ कर हमने बाआल देवता और अश्तोरेत देवी की पूजा की है। यह भयंकर अपराध है। प्रभु अब हमें, हमारे दुश्मनों से छुड़ा लें। हम आपकी ही वन्दना करेंगे। 11 इसलिए प्रभु ने यरूब्बाल, बदान, यिप्तह और शमूएल को भेजकर दुश्मनों से आज़ाद किया। 12 जब तुमने देखा कि अम्मोन का राजा तुम पर हमला कर रहा है, तब हालाँकि प्रभु तुम्हारे राजा थे, तौभी तुमने मुझ से कहा , 'नहीं, हम पर राजा ही राज्य करे।' 13 तुम राजा पर दृष्टि डालो, जिसे तुमने पसन्द किया है। तुमने उसके लिए बिनती भी की थी। अब प्रभु ने तुम्हारे ऊपर एक राजा ठहराया हैं। 14 यदि तुम प्रभु को इज़्ज़त देते और उनका कहना मानते रहोगे, भजन कीर्तन करोगे और बलवा न करोगे। यदि तुम लोग और राजा प्रभु के रास्ते पर चलेंगे, तब तुम्हारा भला होगा। 15 लेकिन यदि तुम ऐसा न करो, और ज़िद्दी हो जाओगे, तो वैसी सज़ा मिलेगी, जैसी तुम्हारे पूर्वजों को मिली थी। 16 अब तुम खड़े हो जाओ और उस बड़े काम को देखना, जो वह करेंगे। 17 क्या आज गेहूँ को काटा नहीं जा रहा है? मैं प्रभु से कहूँगा, वह बादल गरजा कर बरसात भेजेंगे और तब तुम्हें मालूम पड़ेगा, कि ज़िद्द में आ कर जो तुमने राजा मांगा वह अच्छा नहीं किया था। 18 तब शमूएल ने प्रभु से बिनती कीऔर बादल गरजने के साथ बारिश भी हुयी। यह सब देख कर लोग शमूएल और प्रभु से डर गए। 19 सभी शमूएल से कहने लगे कि हमारे लिए प्रार्थना करे कि वे मर न जाएँ, क्योंकि सारे दूसरे गुनाहों के अलावा राजा की मांग करके एक और गुनाह कर दिया है। 20 शमूएल ने उन लोगों से कहा," मत डरो। तुमने ये सब गलती तो की है, लेकिन प्रभु की राह पर चलना मत छोड़ो।अपने पूरे

मन से प्रभु की सेवा करना। 21 अपनी राह
से भटकना नहीं, नहीं तो तुम बेकार की
बातों की ओर चले जाओगे, जो तुम्हें बचा
न सकेंगी न ही मुक्त कर सकेंगी। 22 प्रभु
अपने बड़े नाम के कारण अपने लोगों को
छोड़ेंगे नही, क्योंकि उन्हें यह अच्आ लगा
कि वह तुम्हें अपनने लोग बनाए। 23 फिर
भी जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, ऐसा न हो कि
मैं तुम्हारे लिए दुआ करना छोड़कर प्रभु के
खिलाफ़ गुनाह करूँ। लेकिन मैं तुम्हें अच्छे
और सही रास्ते को बताता रहूँगा। 24 तुम
केवल प्रभु का आदर करो और अपने पूरे मन
और सच्चाई से उनका भजन कीर्तन करना,
क्योंकि ज़रा सोचो, प्रभु ने तुम्हारे लिए कैसे-
कैसे बड़े काम किए हैं। 25 यदि तुम बुराई
करते रहो, तो तुम और तुम्हारा राजा, दोनों
ही मिट जाएँगे।

13 जब शाऊल तीस साल का था, उस
समय से उस पर शासन करने लगा
था। इस्राएलियों पर उसने दो साल राज्य
किया था। 2 शाऊल ने तीन हज़ार आदमियों
को चुना। उनमें से दो हज़ार उसके साथ
मिकमाश में और बेतेल के पहाड़ पर रहे।
एक हज़ार योनातान के साथ बिन्यामीन के
गिबा में रह गये। बाकी लोगों को उसने
अपने निवासस्थान जाने के लिये आदेश
दिया। 3 इसके बाद योनातान ने गिबा वाली
पलिश्तियों की चौकी को ले लिया। इसकी
खबर भी पलिश्तियों को लग गयी।शाऊल
ने सारे देश में नरसिंगा फुँकवाया और यह
कहला भेजा," इब्री सुनें" 4 तब शाऊल ने
पूरे देश में समाचार पहुँचाया कि, पलिश्तियों
की चौकी पर हमला किया गया है। यह
भी कि पलिश्ती इस्राएलियों से नफरत कर
रहे हैं। इसके बाद इस्राएली गिलगाल में
इकट्ठे हुए। 5 पलिश्तियों के तीस हज़ार रथ,
छै: हज़ार सवार और अनगिनित लोग इकट्ठे
हुए। इन लोगों ने बेतावेन के पूरब की ओर
मिकमाश में छावनी डाली। 6 यह देखकर कि
वे परेशानी में पड़ चुके हैं, वे चट्टानों,झाड़ियों
और गुफ़ाओं में छिपने लगे। 7 बहुत से लोग
यरदन पार होकर गिलाद और गाद के देशों
में चले गये, लेकिन शाऊल गिलगाल में ही
रह गया। दूसरे सभी लोग डरते काँपते उसके
साथ हो लिये। 8 वह शमूएल द्वारा ठहराए
वक्त अर्थात सात दिन इन्तज़ार करता रहा
लेकिन शमूएल गिलगाल न आया और बेचैन
लोग इधर-उधर होने लगे । 9 तब शाऊल
ने होम बलि और मेल बलि उसके पास
लाने के लिये कहा, जिसे उसने अर्पण भी
किया। 10 अर्पण के तुरन्त बाद ही शमूएल
आ पहुँचा। शाऊल उससे मिलने के लिये
आगे बढ़ा। 11 शमूएल ने पूछा कि उसने क्या
किया। शाऊल का जवाब था," पलिश्ती
मिकमाश मे इकट्ठे हो रहे थे और तुम्हें आने
में देर हो रही थी। इसी बीच यहाँ से लोग
इधर उधर होने लगे थे। 12 तब मेरे विचार
आया कि मैंने प्रभु से प्रार्थना की नहीं हैं,
कहीं पलिश्ती हम पर हमला न कर दें।
इसीलिये मैंने मजबूरी में कुर्बानी चढ़ा दी।"
13 शमूएल शाऊल से बोला,"यह बेवकूफी
का काम तुमने किया है तुमने प्रभु की बात
नहीं मानी है। इसलिये तुम्हारे जीवन भर तुम
इस्राएलियों पर शासन न कर सकोगे । 14 प्रभु
ने अपने लिये और इस्राएल की चरवाही के
लिये एक ऐसे जन को चुन लिया है, जो उन्हें
पसन्द है। तुमने तो उनकी बात नहीं मानी।
" 15 वहाँ से शमूएल बिन्यामीन के गिबा
को चला गया। शाऊल के साथ उस समय
लगभग छै: सौ लोग थे। 16 शाऊल,उसका
बेटा और उसके साथ के लोग गिबा ही

में रह गये। उस समय पलिश्ती मिकमाश
ही में डेरे डाले हुए थे। 17 पलिश्तियों की
छावनी से हमला करने के लिये तीन दल
निकले। एक दल ने शूआल नाम के देश
की ओर मुड़कर ओप्रा का रास्ता लिया।
18 दूसरा दल बेथोरोन और तीसरा सबोईम
नामक तराई की दिशा में जो जंगल की
तरफ है, चल पड़ा। 19 इसलिये पलिश्ती नहीं
चाहते थे कि इस्राएली हथियार बना सकें,
इसलिये उन दिनों इस्राएल में लोहार नहीं
मिलता था। 20 सभी इस्राएली अपने अपने
हल की फाल भाले, कुल्हाड़ी और हँसुआ
तेज करवाने पलिश्तियों के पास जाया करते
थे। 21 लेकिन उनके हँसुओं, फालों, खेती के
त्रिशूलों और कुल्हाड़ियों की धारें और पैनों
की नोकें सही करने के लिये वे रेती रखा
करते थे। 22 इसलिये युद्ध के समय शाऊल
और योनातान के साथियों में से किसी के
पास न ही तलवार थी, न भाला ।ये हथियार
मात्र शाऊल और उसके बेटे योनातान के
पास थे। 23 इसके बाद पलिश्तियों की चौकी
के सिपाही मिकमाश दर्रे को गए।

14 एक दिन बिना अपने पिता को
बताए, योनातान ने अपने हथियार
उठाने वाले से कहा," चलो, पलिश्तियों की
चौकी की ओर चलते हैं।" 2 उस वक्त शाऊल
तकरीबन छै: सौ लोगों के साथ गिबा की
सरहद पर मिग्रोन में अनार के पेड़ के नीचे
ठहरा हुआ था। 3 शीलो में प्रभु के पुरोहित
एली के बेटे पीनहास का पोता और ईकाबोद
का भाई अहीतूब का बेटा अहिय्याह एपोद
पहने हुए था।उस समय लोगों को यह नहीं
मालूम था कि योनातान जा चुका है। 4 जिन
दर्रों के बीच से होते हुए योनातान पलिश्ती
चौकी पर पहुँचना माँगता था, उनके दोनों
ओर एक एक नुकीली चट्टान थी। इन में से
एक का नाम बोसेस और दूसरी का सेने
था। 5 एक चट्टान उत्तर में मिकमाश के सामने
और दूसरी दक्षिण में गेबा के सामने थी।
6 योनातान ने अपने लड़ाई के शस्त्र उठाने
वाले व्यक्ति से कहा," आओ, हम दूसरी
तरफ़ खतनारहित लोगों की चौकी के पास
जाएँ, हो सकता है,याहवे हमारी मदद करें।
वह कम लोगों से या अधिक लोगों से जीत
दिला सकते हैं।" 7 उसके हथियार ढोने वाले
ने उस से कहा, जो कुछ तुम्हारे मन में है,
वही करो। उधर चलो, मैं तुम्हारी इच्छा
के अनुसार तुम्हारे साथ रहूँगा। 8 योनातन
बोला," सुनो, हम उन मनुष्यों के पास जाकर
अपने को दिखाएँ। 9 यदि वे हम से कहें,
हमारे आने तक ठहरे रहो, तब हम उसी
जगह पर खड़े रहें और उनके पास न चढ़ें।
10 लेकिन यदि वे यह कहें कि हमारे पास आ
जाओ, तो हम यह जानकर चढ़ें कि प्रभु उन्हें
हमारे साथ कर देंगे। हमारे लिए यही निशान
हो। 11 तब उन दोनों ने अपने को पलिश्तियों
की चौकी पर दिखा दिया, तब पलिश्ती
कहने लगे, देखो, इब्री लोग उन बिलों में से
जहाँ वे छिप रहे थे, निकल आ रहे हैं। 12 फिर
चौकी के लोगों ने योनतान और उसके
हथियार उठाने वाले से चिल्लाकर कहा,"
यदि तुम हमारे पास आओ, तो हम तुम्हें कुछ
बताएँगे।"तब योनातान नेअपने हथियार
ढोनेवाले से कहा," मेरे पीछे आओ,क्योंकि
याहवे ने उन्हें इस्राएल के हाथ में कर दिया
है." 13 योनातान अपने हाथों और पाँवों के
सहारे चढ़ गया। उसके हथियार उठानेवाले
ने भी ऐसा किया।पलिश्ती योनातान के
सामने गिरते गए और हथियार उठानेवाला
पीछे- पीछे मारता गया। 14 यह पहली
मारकाट जो योनातान और उसके साथी ने
की, उस में आधे बीघे ज़मीन में तकरीबन

बीस लोग मारे गए। 15 छावनी में,मैदान पर
और उन सब लोगों में थरथराहट हुई और
चौकीदार और बर्बाद करने वाले भी डर
से काँपने लगे। भूकम्प आया और बड़ी
थरथराहट हुई। 16 बिन्यामीन के गिबा में
शाऊल के पहरुओं ने देखा कि वह भीड़
कम होती जा रही है और वे लोग इधर- उधर
चले जा रहे हैं। 17 तब शाऊल ने अपने साथ
के लोगों से कहा, गिनो कि हमारे पास से
कौन- कौन जा चुका है। जब उन्होंने गिनती
की, तब मालूम पड़ा कि योनातान और
उसका वह साथी जो उसके अस्त्र उठाता
था, नहीं है। 18 तब शाऊल ने अहिय्याह से
कहा,"परमेश्वर के बक्से को यहाँ लाओ।"
उन दिनों वह बक्सा इस्त्राएलियों के पास
ही था। 19 शाऊल पुरोहित से बात कर
ही रहा था, कि पलिश्तियों की छावनी में
हल्ला- गुल्ला बढ़ता गया, तभी शाऊल ने
पुरोहित से कहा, अपना हाथ खींच लो।
20 तब शाऊल और उसके साथी एक होकर
लड़ाई करने गए,वहाँ उन्होंने देखा कि एक
आदमी की तलवार उसके साथी पर ही
चल रही है और बड़ा शोर शराबा हो रहा
है। 21 जो इब्री पहले की तरह पलिश्तियों
की ओर थे और उनके साथ चारों ओर
से छावनी में गए थे, वे भी शाऊल और
योनातान के साथ के इस्त्राएलियों में मिल
गए। 22 जितने इस्त्राएली आदमी एप्रैम के
पहाड़ी देश में छिप गए थे, वे भी यह सुनकर
कि पलिश्ती भागे जा रहे हैं, लड़ाई में आ
उनका पीछा करने में लग गए। 23 तब याहवे
ने उस दिन इस्त्राएलियों को आज़ादी दी;
और लड़नेवाले बेतावन की दूसरी ओर तक
चले गए। 24 लेकिन इस्त्राएली आदमी उस
दिन परेशान हुए, क्योंकि शाऊल ने उन लोगों
को प्रतिज्ञा कराकर कहा, शापित हो वह,
जो शाम से पहले कुछ खाए; इसी तरह मैं
अपने दुश्मनों से बदला ले सकूँगा। तब उन
लोगों में से किसी ने खाना न खाया। 25 सभी
लोग जंगल पहुँचे, जहाँ ज़मीन पर शहद पड़ा
हुआ था। 26 जब जंगल में आए, तब क्या
देखा , कि शहद टपक रह है, फिर भी वायदे
के डर के मारे कोई भी अपन हाथ मुँह
तक न ले गया। 27 योनतान ने अपने पिता
को वायदा करवाते सुना था, इसलिए उसने
अपनी छड़ी की नोक से शहद को छुआ
और अपने मुँह तक ले गया। तब जाकर
उसे कुछ ताकत मिली और उसकी आँखें
चमक उठीं। 28 वहाँ के लोगों में से एक
आदमी बोला," तुम्हारे पिता ने तो लोगों
से प्रण कराया था कि जो भी कुछ खाएगा,
सज़ा पाएगा। 29 योनतान बोला," मेरे पिता
ने लोगों को दुख दिया है। शहद खाते ही
मुझे ताकत मिल गई। 30 यदि आज लोग
अपने दुश्मनों की लूट से अपनी मर्ज़ी से
खाते, तो कितना अच्छा होता, अभी तो ढेर
सारे पलिश्ती मारे भी नहीं गए थे।" 31 उस
दिन वे मिकमाश से लेकर अय्यालोन तक
पलिश्तियों को मारते गए। इस कारण लोग
बहुत थक भी गए। 32 इसलिए वे लूट पर टूट
पड़े और भेड़-बकरी, गाय-बैल और बछड़े
लेकर ज़मीन पर मारकर उनका गोश्त खून
के साथ खाने लगे। 33 जब यह खबर शाऊल[a]
को मिली कि लोग खून के साथ मांस खाकर
परमेश्वर के खिलाफ़ गुनाह कर रहे हैं, तब
उनसे कहा कि उन्होंने विश्वासघात किया
है, तुरन्त मेरे पास एक बड़ा पत्थर लुढका
दो। 34 फिर शाऊल ने लोगों को भेजा कि वे
जाकर सब को बताएँ कि उन्हें बैल और भेड़
शाऊल के पाँ लेजाकर वहीं कुर्बान करने

[a] **14.6** शाऊल

चाहिए वहीं उन्हें खाना चाहिए। उन्हें खून
के बगैर खाना है। तब सभी ने ऐसा किया।
35 शाऊल ने परमेश्वर के लिए एक वेदी
बनाई।यह पहली वेदी थी जो उसने परमेश्वर
के लिए बनाई थी। 36 फिर शाऊल ने कहा,"
हम आज रात ही पलिश्तियों का पीछा करें,
लूट डालें और एक इन्सान को भी ज़िन्दा
न छोड़ें। वे बोले," जो तुम्हें अच्छा लगे
वह करो।" लेकिन पुरोहित बोला, "हमें प्रभु
के पास आना चाहिये।" 37 तब शाऊल ने
परमेश्वर से पुछवाया कि उसे पलिश्तियों
का पीछा करना चाहिये या नहीं। 38 तब
शाऊल ने कहा,"हे प्रजा के खास लोगो,
इधर आकर बूझो और देखो कि किस ने
गुनाह किया है। 39 क्योंकि इस्त्राएल को
आज़ाद करनेवाले याहवे की शपथ, यदि
वह गुनाह मेरे बेटे ने किया है, तो उसको
अपनी जान गँवानी पड़ेगी।" लेकिन किसी ने
कुछ न कहा। 40 तब उसने सभी इस्त्राएलियों
से कहा, " तुम लोग एक ओर हो जाओ
और मैं तथा मेरा बेटा योनातान एक ओर।
लोगों का कहना था कि शाऊल जो भी
करना चाहे, उन्हें मंज़ूर है। 41 तब शाऊल
ने याहवे से सच्चाई बताने के लिए कहा।
चिट्ठी योनातान और शाऊल के नाम पर
निकली और प्रजा को राहत मिली। 42 फिर
शाऊल ने कहा, कि अब चिट्ठी उन दोनों
के नाम पर निकाली जाए। ऐसा करने पर
वह योनतान के नाम पर निकली। 43 तब
शाऊल ने योनतान से पूछताछ की। योनातान
ने माना कि उसने शहद चखा था और
उसे मारा जा सकता है। 44 शाऊल बोला,
" ऐसा ही होगा"। 45 तब सारे इस्त्राएली
चिल्ला उठे," जिस ने हमें आज़ादी दी
है, क्या उसके साथ ऐसा बर्ताव होगा?
इसलिए कि उसने परमेश्वर के साथ होकर
काम किया है, कोई उसका बाल-बाँका नहीं
कर सकता"। इस तरह उसकी जान बच
गई। 46 तब शाउल पलिश्तियों का पीछा
छोड़कर लौट गया और पलिश्ती भी वापिस
चले गए। 47 जब शाऊल इस्त्राएलियों के
बीच मज़बूत हो गया, तब वह मोआबी,
अम्मोनी, एदोमी, पलिश्ती और चारों ओर
के दुश्मनों से लड़ा।जहाँ- जहाँ वह जाता
था, जीत उसी की होती थी। 48 फिर उसने
बहादुरी करके अमलेकियों को जीता वर
इस्त्राएलियों को लूटनेवालों के हथों से
आज़ाद किया। 49 शाऊल के बेटे योनतान,
यिशवी और मलकीश थे। उसकी दो बेटियों
के नाम मेरब और मीकल थे। 50 शाऊल की
पत्नी का नाम अहीनोअम था, जो अहिमास
की बेटी थी।उसके प्रधान सेनापति क नाम
अब्नेर था जो शाऊल के चाचा नेर क बेटा
था। 51 और शाऊल का पिता कीश था।
अब्नेर का पिता नेर अबीएल का बेटा था।
52 शाऊल जीवन भर पलिश्तियों से लड़ता
रह। जब जब शाऊल को कोई अच्छा योद्धा
दिखता था, वह उसे अपनी सेवा में रख लिया
करता था।

15 शमूएल ने शाऊल से कहा,
"इस्राएल पर शासन के लिए प्रभु ने
मुझे कहा था, कि मैं तुम्हें अलग (अभिषेक)
करूँ, इसलिए अब तुम प्रभु की बात पर
ध्यान दो।" 2 संदेश यह है कि इस्राएलियों
के मिस्र से निकलने के बाद, रास्ते में
अमालेकियों ने उनका मुकाबला किया था।
3 इसलिए अब तुम जाओ और उन्हें मारो।
जो कुछ उनका है, उसे बर्बाद कर डालो।
आदमी, औरत, बच्चे, शिशु और मवेशी सभी
को नाश कर डालना। 4 इसके बाद शाऊल
ने लोगों को बुलाकर तलाईम में गिना। वहाँ
दो लाख सिपाही और दस हज़ार आदमी

थे। 5 इसके बाद शाऊल ने अमालेक के
पास एक नाले में छुप कर वार करने वालों
को बैठा दिया। 6 शाऊल केनियों से बोला,
“यहाँ से दूर जाओ। अमालेकियों के बीच में
से निकल आओ, कहीं उनके साथ तुम भी
न मर जाओ। तुमने इस्राएलियों के मिश्र की
गुलामी में से निकलते समय उन पर दया
दिखाई थी।” तुरन्त केनी वहाँ से निकल
गए। 7 तब शाऊल ने हवीला से शूर तक के
इलाके में अमालेकियों का मारा। 8 उसने
राजा अगाग को ज़िन्दा पकड़ लिया और
उसके लोगों को तलवार से मार डाला।
9 लेकिन शाऊल और लोगों ने अगाग और
बढ़िया -बढ़िया भेड़-बकरियाँ, गाय- बैल,
मोटे जानवर, मेम्ने और अच्छी चीज़ों को
बर्बाद नहीं करना चाहा। वे सभी वस्तुएँ
जो अच्छी और बिना इस्तेमाल की थीं,
उन्हें बर्बाद कर डाला। 10 एक दिन प्रभु
का संदेश शमूएल को मिला, 11 “मुझे इस
बात का दुख है, कि मैंने शाऊल को राजा
बनाया। वह मेरी बात नहीं मानता है।” यह
बात सुनकर शमूएल को बुरा लगा और रात
भर दुआ करता रहा। 12 शाऊल से मुलाकात
करने वह बहुत सवेरे उठ गया। उसे बताया
गया कि शाऊल ने कर्मेल में एक यादगार
इमारत बनायी है। और अभी गिलगाल जा
चुका है। 13 उसके पास पहुँचते ही शाऊल
ने कहा, “तुम्हें प्रभु ने आशीष दी है और मैंने
प्रभु की बात मानी है।” 14 लेकिन शमूएल
बोल उठा, “यदि ऐसा है तो मैं बकरियों
और गाय-बैलों की आवाज़ क्यों सुन रहा
हूँ?” 15 शाऊल ने जवाब में कहा,“ये सब
हम आमालेकियों, से ले आए है, ताकि
तुम्हारे प्रभु के लिए कुर्बानी (भेंट) करें।
बाकी को हमने नष्ट कर डाला है।” 16 तब
शमूएल ने कहा, “एक सेकेण्ड रूको, मैं
तुम्हें बताऊँगा कि बीती रात प्रभु ने मुझ से
क्या कहा है।” 17 तब शमूएल बोला, “क्या
यह सही नहीं, कि अपने कुल में तुम सब
से छोटे थे, फिर भी तुम्हें राजा ठहराया
गया। 18 तुम्हें प्रभु ने एक खास काम करने
के लिए भेजा था कि बलवा करने वाले
अमालेकियों को बिल्कुल खत्म कर डालें।
19 तुमने प्रभु की बात क्यों नहीं मानी और
लूट-पाट के सामान का लालच किया, यह
प्रभु का बिल्कुल पसन्द नहीं था?” 20 तब
शाऊल ने उत्तर दिया, “मैंने प्रभु के आदेश
को माना है। 21 लेकिन लोग लूट के सामान
में से अच्छी चीजें ले आएँ हैं, ताकि प्रभु को
भेंट चढ़ाएँ। ” 22 तब शमूएल ने कहा, “क्या
होमबलि और कुर्बानियों से प्रभु उतना खुश
होते हैं, जितना अपनी आज्ञाओं के मानने
से ? आज्ञा माननाऔर ध्यान देना (सुनना)
मेंढ़ों की चर्बी से बेहतर है। 23 क्योंकि
बलवा करना शकुन को मानने के बराबर
अपराध है और हठीलापन मूरत की पूजा
के बराबर अपराध है। इसलिए कि तुमने
प्रभु की बात मानने से इन्कार किया है,
उन्होंने भी तुम्हें राजा बना रहना मंजूर नहीं
किया है।” 24 तब शाऊल शमूएल से कहने
लगा,“मैंने गुनाह किया है। सचमुच मैंने प्रभु
और तुम्हारे आदेश को नहीं माना। लोगों से
डरने के कारण मैने उनकी बात मान ली।
25 इसलिए मेहरबानी से मेरे अपराध को
माफ कर दोऔर मेरे साथ आओ, ताकि मैं
प्रभु की आराधना करूँ। 26 लेकिन शमूएल
बोला, “मैं तुम्हारे साथ नहीं आऊँगा। क्यों
तुमने प्रभु की बात को टाला है और तुम्हें
राजा बने रहने की अनुमति उन से नहीं हैं।”
27 जाने के लिए शमूएल जैसे ही पीछे मुड़ा,
शाऊल ने उसके चोगे को पकड़ लिया, जिस
से वह फट गया। 28 शमूएल ने शाऊल से

कहा, “आज ही तुम्हारे हाथ से देश निकल
गया है, और उसके हाथ में दे दिया है जो
तुम से अच्छा है।” 29 इस्राएल के प्रभु ने
झूठ बोलते और न ही अपना इरादा बदलते
हैं। वह इन्सान नहीं हैं कि अपना मन बदल
दें। 30 तब शाऊल बोला, “मैंने अपराध
किया है, लेकिन इस्राएल और बुज़ुर्गो के
सामने मेरी इज़्ज़त रखो और मेरे साथ लौट
आओ, ताकि मैं तुम्हारे प्रभु परमेश्वर की
आराधना कर सकूँ।” 31 शमूएल शाऊल के
पीछे हो लिया और वहाँ आराधना भी की।
32 तब शमूएल बोला, “अमालेकियों के
राजा अगाग को मेरे पास लाओ” बड़ी खुशी
के साथ अगाग उसके पास आया और
कहा, “मेरे मन से मौत की कड़वाहट खत्म
हो गयी है। 33 शमूएल ने कहा, “जिस तरह
से तुम्हारी तलवार से महिलाएँ बगैर सन्तान
के रह गयीं, उसी तरह से तुम्हारी माँ बिना
औलाद रहेगी।” यह कह कर शमूएल ने
अगाग के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। 34 वहाँ से
शमूएल रामा चला गया और शाऊल गिबा
को। 35 अपने मरने तक शमूएल ने शाऊल
को कभी न देखा।शमूएल अपने जीवन के
अन्त तक रोता रहा।प्रभु को यह दुख था
कि उन्होंने शाऊल को राजा बनाया।

16 प्रभु ने शमूएल से कहा,“मैं तो
शाऊल को गद्दी पर नहीं बैठा रहने
दूँगा। इसलिए तुम कब तक दुखी रहोगे?”
मैं तुम्हें बेतलहमी यिशै के पास भेजूँगा।
उसके एक बेटे को मैंने राजा के लिए चुना
है।” 2 शमूएल ने पूछा,“यह मुझे कैसे मालूम
पड़ेगा? शाऊल को मालूम होने पर वह
मेरा कत्ल कर डालेगा? तब प्रभु ने कहा,
“अपने साथ एक बछिया ले जा कर कहना
कि तुम प्रभु के लिए बलि चढ़ाने आए हो।
3 बलिदान में यिशै को बुलाना। तुम्हें क्या
करना है, किस का अभिषेक करना है, मैं
बताऊँगा। 4 शमूएल ने वैसा किया भी। वह
बेतलेहम गया। उस नगर के बुज़ुर्ग लोग उस
से मिलने आए । और पूछा, “क्या तुम अच्छे
विचार से आए हो?” 5 वह बोला, “मैं अच्छे
मन से यहाँ आया हूँ। खुद को पवित्र करो
और कुर्बानी करने मेरे साथ आओ।” यिशै
और उसके बेटों को भी उसने वहाँ आने
का नेवता दिया। 6 उनके अन्दर आने पर
एलीआब पर उसकी नज़र पड़ी और सोचा
कि वही अभिषिक्त होने के लिए है। 7 लेकिन
शमूएल से प्रभु ने कहा,“बाहरी रूप और
कद देखने से कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि वह
मेरा चुनाव नहीं है। प्रभु जिस तरह से देखते
हैं, वैसा इन्सान का देखना नहीं है।” 8 तब
यिशै ने अबीनादाब को बुलाया और उस
को शमूएल के सामने हो कर जाने दिया।
उसने कहा, “यह भी प्रभु का चुनाव नहीं
है।” 9 इसके बाद शम्मा को आगे लाया गया,
जिसे नहीं कह दिया गया। 10 इस तरह यिशै
के सात बेटे शमूएल के सामने लाए गए
और कोई भी नहीं चुना गया। 11 तब शमूएल
ने यिशै से पूछा,“क्या यही सब बच्चे है?”
वह बोला, सब से छोटा बेटा बाहर भेड़
चरा रहा है।” तब उसे बुला कर वहाँ लाये
जाने के लिए कहा गया। 12 वह आया और
उसके चेहरा खूबसूरत लाल-लाल था, आँखें
सुन्दर थीं। तब प्रभु ने कहा, “यह ही है
जिसे तुम अभिषेक करो।” 13 तब शमूएल
ने उसके भाईयों के सामने वैसा किया भी।
उसी दिन से दाऊद पर प्रभु का आत्मा
शक्ति के साथ उतरने लगा। 14 दूसरी ओर
शाऊल के ऊपर से प्रभु का आत्मा हट गया
और एक बुरी आत्मा उसे परेशान करने
लगी। 15 तब शाऊल की हालत देख कर

उसके कर्मचारियों ने सलाह दी, 16 कि ऐसा
व्यक्ति यहाँ आए जो वीणा बजाने में माहिर
हो। उसके बजाने से तुम्हें राहत मिलेगी।
17 शाऊल राजी हो गया और ऐसे व्यक्ति को
वहाँ लाने का आदेश दिया। 18 किसी ने उसे
दाऊद के बारे में बताया, जो यिशै का बेटा
था। यह भी कि वह अच्छा योध्दा, बुद्धिमान,
खूबसूरत और वीणा बजाने वाला है। उसके
साथ प्रभु की मौजूदगी भी है। 19 शाऊल ने
यिशै के पास अपने दूत भिजवाए ताकि वह
अपने बेटे दाऊद को भेज दे। 20 तब यिशै ने
एक गदहा पर रोटियाँ, एक सुराही दाखमधु
और एक बकरी का बच्चा अपने बेटे दाऊद के
साथ शाऊल के पास भेजा। 21 दाऊद शाऊल
के पास आकर सेवा करने लगा। शाऊल उसे
बहुत चाहने लगा। दाऊद उसका हथियार
ढोने वाला भी बन गया। 22 तब शाऊल ने
उसके पिता को सन्देश भेजा कि दाऊद को
उसके पास ही रहने दे, क्योंकि वह उससे
खुश था। 23 जब कभी दुष्टात्मा शाऊल के
ऊपर उतरती थी, दाऊद वीणा बजाया करता
था और शाऊल को चैन मिलाता था।

17 एक दिन पलिश्ती अपनी फ़ौज
लेकर आ गए। उन लोगों ने यहूदा के
सोको और अजेका के बीच एफेस दम्मीम में
छावनी डाली थी। 2 शाऊल और उसके लोग
एला की घाटी में जमा हुए ताकि पलिश्तियों
का मुकाबला कर सकें। 3 दोनों पहाड़ पर
एक दूसरे के सामने थे। बीच में घाटी थी।
4 तब पलिश्तियों में से एक बहादुर सैनिक
बाहर आया। वह गत का रहने वाला था और
उसका नाम था गोलियत। उसकी ऊँचाई छः
हाथ एक बालिश्त थी। 5 उसके सिर पर
कांसे की टोपी और देह पर कांसे का कवच
था, जिस का भार पाँच हज़ार शेकेल था।
6 उसके पैरों पर कांसे के कवच तथा कंधों
के बीच कांसे की एक बरछी लटक रही थी।
7 उसके भाले की छड़ जुलाहे की बल्ली की
तरह थी। उस भाले के फल का वनज छः सौ
शेकेल लोहा था। एक आदमी उसकी ढाल
लेकर उसके आगे चलता था। 8 खड़े होकर
उसने इस्राएली सेना को ललकारा, “तुमने
लड़ाई के लिए फ़ौज क्यों लाए हो ? क्या
मैं पलिश्ती नहीं हूँ? क्या तुम लोग शाऊल
के नहीं हो? अपनी ओर से एक व्यक्ति को
भेजा ताकि मुकाबला करे।” 9 मुझ से लड़
कर मुझे मार डाले, तो हम तुम लोगो के
गुलाम बन जाएँगे। यदि मैं उस पर ज़ोरावर
हुआ तो तुम लोग हमारे गुलाम बनकर हमारी
सेवा करना। 10 फिर पलिश्ति बोला, “मैं
आज इस्राएल को चुनौती दे रहा हूँ। एक
आदमी को भेजो, जो हम से युद्ध कर सके।
11 यह सब सुनकर शाऊल और इस्राएल में
डर समा गया। 12 दाऊद के पिता का नाम
यिशै था जो एप्राता का रहने वाला था, और
कुछ मिला कर उसके आठ बेटे थे । यिशै
काफी बूढ़ा हो चला था। 13 शाऊल की फ़ौज
में यिशै के तीन बेटे एलीआब, अबीनादाब
और शम्मा शामिल हो चुके थे। 14 दाऊद
सब से छोटा था। 15 वह, अपने पिता के
मवेशी चराने शाऊल के पास से बेतलेहम
आया-जाया करता था। 16 चालीस दिन एक
लम्बे अर्से तक वह पलिश्ती सुबह शाम आ
खड़ा होता था। 17 तब यिशै दाऊद से बोला,
“अपने भाईयों के लिए रोटी और एपा भर
भुना अनाज ले जाओ। 18 उनके सहस्त्रपति
के लिए भी पनीर की दस टिकियाँ ले जाओ।
अपने भाईयों का हाल-चाल भी ले आना।
19 शाऊल और तुम्हारे भाई और दूसरे लोग
एला की घाटी में पलिश्तियों से लड़ रहे
हैं। 20 इसलिए अगले दिन दाऊद बहुत सवेरे

उठ गया। उसने भेड़ों को रखवाले के सुपुर्द
किया। तब खाने की चीजें लेकर चल पड़ा।
जब दोनों सेनाओं में टकराव की नौबत आ
चुकी थी, तभी वह यहाँ पहुँचा। 21 दोनों
फ़ौजें आमने सामने थीं। 22 उसने सामान की
देखरेख करने वाले के हाथ में चीजे़ थमा
दी और युद्ध पंक्ति तक पहुँच गया। 23 अपने
भाईयों से वह बात कर ही रहा था, कि वह
पलिश्ती गोलियत सामने आ गया। दाऊद
ने उसकी बातों को भी सुना। 24 उस आदमी
को देखते ही इस्राएली भाग खड़े हुए। 25 वे
दाऊद से बोले, "क्या तुमने इस आदमी
को और उसके ललकारने को देखा है। जो
व्यक्ति इसे हराएगा, उसे राजा दौलत दंगा,
अपनी बेटी से शादी कराएगा और उसके
पिता के परिवार को इस्राएल में आज़ाद कर
देगा। 26 तब दाऊद अपने पास खड़े लोगों से
बोला,"जो इस पलिश्ती को मारेगा, उसके
लिए क्या किया जाएगा ? इस खतनारहित
आदमी की हिम्मत कैसे हुई कि जीवित प्रभु
की फौज़ को चुनौती दे? 27 तब लोगों ने
बताया कि मारने वाले को क्या मिलेगा।
28 दाऊद के बड़े भाई ने दाऊद को लोगो
से बाते करते सुना और गुस्से में आ गया।
उसने कहा, "भेड़ बकरियों को छोड़ तुम यहाँ
क्यों आए हो? तुम यहाँ युद्ध देखने के लिए
आए हो, तुम्हारी ढिठाई मुझे मालूम है।"
29 दाऊद ने पूछा, "मैंने क्या किया, मैं तुम
एक सवाल पूछ रहा था? 30 फिर एक और
बार उसने दूसरे आदमी से पूछा। उसे फिर
वही जवाब मिला। 31 दाऊद की कही बातों
को शाऊल को बताए जाने पर, दाऊद को
शाऊल ने बुलवा लिया। 32 दाऊद ने शाऊ से
कहा, "उस आदमी के कारण कोई परेशान
मत हो। मैं जाकर उस से लड़ूँगा"। 33 शाऊल
उस से बोला, "तुम नहीं लड़ पाओगे, क्योंकि
तुम छोटे लड़के हो और वह बचपन ही से
फौजी है। 34 दाऊद ने कहा,"भेड़-बकरियों
का चराते समय जब कभी शेर या भालू मेम्ने
को ले गया। 35 ऐसे समय मैं दौड़कर हमला
कर उसे जानवर के मुँह से छुड़ा लेता था। मैं
उस जानवर को जान से मार भी डालता था।
36 मैं शेर और भालू दोनों ही को मार चुका हूँ।
यह खतनारहित पलिश्ती का भी वही हाल
होगा। क्योंकि उसने जीवित प्रभु की फौज
को चुनौती दे डाली है।" 37 दाऊद कहता
गया, "प्रभु, जिन्होंने मुझमें शेर और भालू
से बचाया है, इस पलिश्ति से बचाएँगे। तब
शाऊल से बचाएँगे। तब शाऊल ने जवाब में
कहा, "जाओ, तुम्हारे साथ प्रभु हैं ।" 38 फिर
शाऊल ने दाऊद को अपने कपड़े पहनाए।
उसके सिर पर अपनी टोपी रखी और कवच
पहना दिया। 39 कवच के ऊपर उसने तलवार
को कसा और चलाने की कोशिश की। इसके
पहले दाऊद का इस को चलाने में कोई
तर्जुबा नहीं था। इसलिए उसने शाऊल से
कहा,"मैं यह सब पहन कर चल नहीं पा रहा
हूँ, क्योंकि यह पहला अनुभव है यह सब
पहनने का। यह कह कर उसने उत्तर दिया।
40 फिर उसने एक लाठी हाथ में ली और
नाले से पाँच चिकने पत्थर ले कर अपनी
झोली में रखें। गोफन ले कर वह पलिश्ती
के सामने गया। 41 गोलियत भी दाऊद के
पास आने लगा। पलिश्ती की ढाल देनेवाला
उसके आगे-आगे चल रहा था। 42 दाऊद
को देखते ही पलिश्ती ने उसे नीचा समझा।
दाऊद उस समय लड़का ही था, खूबसूरत
था और उसके चेहरे पर लाली झलकती
थी। 43 पलिश्ती दाऊद से बोला,"क्या तुम
मुझे कुत्ता समझ बैठे हो, कि लाठी लेकर
आए हो ?" इसके बाद उसने अपने देवताओं
के नाम पर बुरा-भला कहना शुरू किया।

44 पलिश्ती ने कहा, “मेरे पास तो आओ,
ज़रा मैं तुम्हारा गोश्त आकाश की चिड़ियों
और जंगली जानवरों को दूँगा” 45 दाऊद ने
जवाब दिया, “तुम तो मेरे खिलाफ़ तलवार,
भाला, और बरछा लेकर आए हो, लेकिन मैं
सेनाओं के प्रभु, इस्राएल की फ़ौज के प्रभु के
नाम से आया हूँ, जिसे तुमने चुनौती दी है।
46 आज ही तुम्हें प्रभु मेरे हाथ सुपुर्द कर देंगे।
तुम्हें मार कर सिर धड़ से अलग करूँगा।
पलिश्ती फ़ौजियों की देह भी चिड़ियाँ और
जानवर खाएँगे। इस तरह से दुनिया के लोग
जान सकेंगे कि इस्राएल प्रभु है। 47 सभी
लोग भी यह जान लेगे कि प्रभु अस्त्र-शस्त्र
(हथियारों) से जीत नहीं दिलाते हैं। लड़ाई
प्रभु की है और वही तुम लोगों को हमारे
हाथो में कर देंगे। 48 इसी दौरान वह पलिश्ती
दाऊद का मुकाबला करने के लिए आगे
बढ़ा। उसी वक्त दाऊद भी आगे दौड़ा।
49 अपनी थैली में से एक पत्थर को उसने
गोफन में रख कर पलिश्ती के माथे पर
मारा और पलिश्ती औंधे मुँह ज़मीन पर गिर
पड़ा। 50 इस तरह पत्थर मार कर पलिश्ती
का ढेर लगा दिया। किसी हथियार का दाऊद
ने इस्तेमाल नहीं किया। 51 दौड़कर उसने
पलिश्ती की तलवार ली और उसे मार डाला
और सिर को धड़ से अलग किया। यह
सब देख कर पलिश्ती भाग खड़े हुए। 52 तब
इस्राएल और यहूदा के लोगों ने ललकारा
और घाटी के सिरे तथा एक्रोन के फाटको
तक पलिश्तियों का पीछा किया। जिन्हें मारा
गया, वे शारेम के रास्ते में गत और एक्रोन
तक पड़े थे। 53 पलिश्तियों का पीछा खत्म
करने के बाद वे उनकी छावनी में आए और
सब कुछ लूट लिया। 54 तब दाऊद ने उस
पलिश्ती का सिर यरूशलेम पहुँचा दिया।
55 जब शाऊल ने दाऊद को पलिश्ती का
मुकाबला करने के लिए जाते देखा, तब
उसने सेनापति अब्नेर से कहा, “यह जवान
किस का बेटा है ?” अब्नेर बोला,“मुझे
नहीं मालूम।” 56 राजा ने आदेश दिया, “इस
बात का पता लगाया जाए।” 57 दाऊद जब
पलिश्ती को खत्म करके लौटा, तब अब्नेर
ने दाऊद को पलिश्ती का सिर हाथ में लिए
हुए शाऊल के सामने पेश किया। 58 शाऊल
ने दाऊद से सवाल किया,“तुम किस के बेट
हो ?” उस का जवाब था,“मैं तुम्हारे सेवक
बैतलहमी यिशै का बेटा हूँ।”

18 दाऊद से बातचीत करने के बाद,
योनातान को दाऊद से लगाव हो
गया। 2 उसी दिन शाऊल उसे ले गया, और
उसे घर नहीं लौटने दिया। 3 तब दाऊद और
योनातान ने आपस में वायदा (वाचा) किया।
4 योनातान ने अपना चोगा उतारा और दाऊद
को दिया। उसने अपनी तलवार कवच धनुष
और कमरबन्द भी दाऊद के हवाले कर
दिए। 5 शाऊल दाऊद को जहाँ भी भेजता
था, दाऊद जाता था और और बुद्धिमानी
और कामयाबी के साथ काम को पूरा करता
था। इसलिए शाऊल ने उसे फ़ौजियों के
ऊपर ठहराया। यह बात सभी लोगों तथा
शाऊल के काम करने वालों की भी ठीग
लगा। 6 एक दिन पलिश्तियों को मार कर
दाऊद वापस लौट रहा था। तभी इस्राएल की
महिलाएँ बाजे-बजाते गाते, नाचते शाऊल से
मिलने अपने अपने इलाकों से निकल पड़ीं।
7 नाचते -नाचते वे गा रही थीं;“शाऊल ने
मारा हज़ारो को, दाऊद ने मारा लाखों को
8 यह सभी सुनकर दाऊद को गुस्सा आया।
वह बोला, “दाऊद को इन महिलाओं ने
ज़्यादा मान-सम्मान दिया है और मुझे कम।
अब राज्य को छोड़ उसे और क्या मिलना

बाकी रह गया है।" 9 उसी दिन से शाऊल
दाऊद को शक की निगाह से देखने लगा।
10 अगले दिन प्रभु ने शाऊल पर बड़ी शक्ति
बुरी आत्मा को उतरने दिया। शाऊल घर
ही में चीखने -चिल्लाने लगा। शाऊल के हाथ
में भाला था और दाऊद के हाथ में वीणा,
जिसे वह बजा रहा था। 11 तब शाऊल ने
सोचा कि वह भाले से दाऊद को मार सकेगा
इसलिए उसने दो बार भाला फेंका, लेकिन
दोनों बार दाऊद हट गया। 12 शाऊल दाऊद
से डरता भी था, क्योंकि प्रभु उसके साथ
थे। शाऊल के साथ प्रभु नहीं था। 13 इसलिए
शाऊल ने उसे अपने पास से अलग करके
सहस्त्रपति ठहरा दिया। वह प्रजा के सामने
आया जाया करता था। 14 दाऊद अपने
सभी कामों में अक्लमन्दी दिखाता था
और याहवे की मौजूदगी उसके साथ थी।
15 उसकी बुद्धिमानी देखकर शाऊल डर
गया। 16 लेकिन इस्राएल और यहूदा के सभी
लोग दाऊद को चाहते थे। 17 यह सोचकर
कि पलिश्ती दाऊद को अपना निशाना
बनाए, शाऊल बोला, " सुनो, मैं अपनी बड़ी
बेटी मेरब को तुम्हारी पत्नी के रूप में
दूँगा यदि तुम बहादुरी से याहवे कीओर से
जंग करो।" 18 दाऊद ने शाऊल से कहा,
"मैं मेरा जीवन और मेरे पिता के कुल की
क्या अहमियत है कि मैं राजा का दामाद
बनूँ? 19 जब समय आया कि शाऊल की बेटी
की शादी हो, तब महलोई अद्रीएल को चुना
गया। 20 शाऊल की बेटी मीकल को दाऊद
से प्यार हो गया। यह बात शाऊल को पसन्द
आई। 21 शाऊल चाहता था कि वह दाऊद
के लिए जाल बन जाए और पलिश्ती उसे
नुक्सान पहुँचाएं। 22 फिर शाऊल ने अपने
कर्मचारियों को हुक्म दिया,कि दाऊद से
छिपकर ऐसी बातें करो, कि सुनो, राजा तुम
से खुश है और उसके सभी कर्मचारी भी तुम
से प्यार करते हैं। इसलिए तुम राज के दामाद
बन जाओ। 23 तब शाऊल के कर्मचारियों ने
दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं। लेकिन दाऊद
ने कहा,"मैं तो गरीब और तुच्छ हूँ, फिर
क्या तुम्हारी निगाह में राजा का दामाद होना
छोटी बात है? 24 जब शाऊल के कर्मचारियों
ने उसे बताया, कि दाऊद ने ऐसी ऐसी बातें
कहीं। 25 तब शाऊल ने कहा," तुम दाऊद
से कहो,कि राजा लड़की की कीमत तो
कुछ नहीं चाहता है, केवल पलिश्तियों की
एक सौ खलड़ियाँ चाहता है, ताकि अपने
दुश्मनों से बदला ले। शाऊल चाहता यह था
कि पलिश्तियों से दाऊद को मरवा डाले ।
26 जब उसके कर्मचारियों ने दाऊद को ये
बातें बताई, तब वह राजा कादामाद बनने
के लिए तैयार हो गया। शादी के कुछ ही
दिन रह गए थे। 27 तब दाऊद अपने साथियों
को लेकर चल पड़ा, और पलिश्तियों के
दो सौ आदमियों को मार डाला। तब दाऊद
खलड़ियों को लेकर आ गया, और वे राजा
को गिन- गिन कर दी गई इसलिए कि वह
राजा का दामाद हो जाए। फिर शाऊल ने
अपनी बेटी को उसे ब्याह दिया। 28 जब
शाऊल ने देखा, और इरादा किया कि याहवे
दाऊद के साथ है, और मेरी बेटी मीकल
उस से प्रेम रखती है, 29 तब शाऊल दाऊद
से और भी डर गया।और शाऊल हमेशा
के लिए दाऊद का दुश्मन हो गया। 30 फिर
पलिश्तियों के मुखिया निकलकर आ गए,
और जब जब वे निकलते थे, तब तब दाऊद
ने शाऊल के और सभी कर्मचारियों से ज़्यादा
अक्लमन्दी दिखाई। इस से उसका नाम
बड़ा हो गया।

19 इसलिए शाऊल ने अपने बेटे तथा
अपने सब काम करने वालों से
दाऊद की जान लेने को कहा। लेकिन
शाऊल का बेटा योनातान दाऊद से खुश
था। 2 योनातान ने दाऊद को बताया कि,"
मेरे पिता शाऊल इस फ़िराक में है कि तुम
को मार डालें। इसलिए तुम सुबह संभल
कर रहना और किसी अनजान जगह में छुप
जाना। 3 तब जिस मैदान में तुम छिपे रहोगे,
वहीं मैं अपने पिता के पास खड़ा रहूँगा
और उससे तुम्हारे बारे में बात करूँगा।
यदि मुझे कुछ सुराग मिलेगा तो मैं तुम्हें
बता दूँगा। 4 तब योनातान ने अपने पिता
शाऊल से दाऊद की बड़ाई करते हुए कहा,
"राजा अपने दास के खिलाफ़ गुनाह न करें।
उसने आपकी भलाई का काम किया है,
आपके विरोध में नहीं। 5 अपनी जान को
हथेली पर रख उसने पलिश्ती को मार डाला,
और याहवे ने पूरे इस्त्राएल को आज़ादी
दी। इससे आप को खुशी भी हुई थी। फिर
उसे बना कारण मारकर आप खूनी क्यों
बनें?" 6 शाऊल ने योनातान की बात मानकर
वायदा किया, " उसका बाल-बाँका भी न
होगा।" 7 तब योनातान ने दाऊद को बुलाकर
ये सारी बातें बताई। फिर योनतान दाऊद
को शाऊल के पास ले गया और सब कुछ
पहले की तरह हो गया। 8 जब युद्ध हुआ,
दाऊद ने पलिश्तियों के छक्के छुड़ा दिए।
9 एक दिन शाऊल घर में भाले के साथ बैठा
हुआ था और दाऊद बाजा बजा रहा था।
तभी एक दुष्टात्मा को परमेश्वर ने यह छूट
दी कि वह पीड़ित करे। 10 शाऊल ने भाला
फेंक कर दाऊद को अपना निशाना बनाया,
लेकिन दाऊद जान बचाकर वहाँ से भागा।
11 शाऊल ने दाऊद के घर पर लोग भेजे कि
वे उस पर नज़र रखें और मौका मिलने पर
मार डालें।दाऊद की पत्नी ने उसे सतर्क
किया कि सुबह तक उसे मारा जा सकता है।
12 तब मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतारा
और वह बच कर निकल गया। 13 मीकल ने
घर के देवताओं को खटिया पर लिटा दिया
और बकरियों के बालों की बनी तकिया को
सिरहाने रखकर कपड़ों से उढ़ा दिया। 14 जब
दूत दाऊद को पकड़ने आए, मीकल ने कहा
कि वह बीमार है। 15 फिर भी शाऊल उसे
खतम करना चाहता था 16 अन्दर जाने पर
दूतों ने पाया कि खटिया पर मूर्तियाँ पड़ी हैं
और सिरयाने तकिया पड़ा है। 17 शाऊल ने
मीकल से कहा," तुमने मुझ से झूठ क्यों
बोला?"मीकल ने जवाब में कहा," उसने
मुझसे ज़बरदस्ती की।" 18 दाऊद भागकर
रामा में शमूएल के पास जा पहुँचा और सब
समाचार दिया।तब वे दोनों नबायोत में जाकर
रहने लगे। 19 शाऊल को यह खबर मिल
गई। 20 तब शाऊल ने उसे पकड़ने के लिए
दूत भेजे। जब शाऊल के दूतों ने नबियों के
झुण्ड को नबूवत करते और शमूएल को
उनकी अगुआई करते देखा, तब परमेश्वर
का आत्मा उन पर आया और वे भी नबूवत
करने लगे। 21 यह समाचार पाकर शाऊल
ने कुछ और दूत भेजे और वे भी नबूवत
करने लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत
भेजे। उन्होंने भी भविष्यद्वाणी करना शुरु कर
दिया। 22 वह स्वयं रामा को रवाना हुआ
और सेक वाले गड्ढे पर आकर लोगों से
पूछा," शमूएल और दाऊद कहाँ हैं?" किसी
ने बताया कि वह रामा के नबायोत में हैं।
23 तब वह नबायोत की ओर बढ़ गया। उस
पर भी परमेश्वर का आत्मा उतरा और
नबायोत तक पहुँचते -पहुँचते नबूवत करता
गया। 24 अपने कपड़ों को हटाने के बाद वह
भी नबूवत करने लगा और ज़मीन पर वह

रात-दिन वैसा ही पड़ा रहा। इसलिए यह
सवाल लोग पूछने लगे," क्या शाऊल भी
एक नबी है?"
20 दाऊद नामोत से भाग खड़ा हुआ
और योनातान के पास आया। वह
बोला "मै ने कोन सा जुर्म किया है, कि
तुम्हारा पिता मेरे खून का प्यासा हो गया है?"
2 योनातान बोला,"नहीं, ऐसा नहीं है, तुम्हारा
कोई भी बाल बाँका नहीं कर सकता। मुझे
बिना बताए मेरा पिता कुछ भी नहीं करता है।
इसलिए वह यह बात मुझ से क्यों छिपाएगा।
3 फिर भी दाऊद ने वायदा किया, "तुम्हारा
पिता जानता है कि मेरी कृपा तुम्हारे ऊपर है
और उसने कहा है, कि यह बात योनातान
को ना मालूम हो सके, नहीं तो वह निराश
होगा। लेकिन सचमुच प्रभु के जीवन की
शपथ और तुम्हारे जीवन की शपथ यह
जानो कि तुम्हारी और मेरी जान के बीच की
दूरी एक कदम की ही है। 4 तब योनातान
ने दाऊद से कहा, "तुम मुझे जो कुछ करने
के लिए कहो, मैं करने के लिए तैयार हूँ।"
5 तब दाऊद ने योनातान से कहा,"कल नया
चाँद है, मुझे राजा के साथ खाने पर बैठना
है। मुझे जाने दो ताकि तीसरे दिन शाम तक
मैदान में छिपा रहूँ। 6 यदि तुम्हारा पिता मुझे
याद करे तो बताना, "दाऊद को अपने घर
बेतलेहेम जाना था, इसलिए उसने मुझ से
छुट्टी माँगी थी ताकि सालाना बलिदान के
समय शामिल हो सके। 7 यदि वह कहे, ठीक
है। तब तो मैं बच गया। यदि बहुत गुस्सा
आए, तो समझ लेना कि उसने बुराई ही ठान
ली है। 8 अब तुम अपने दास के साथ अच्छा
बर्ताव करना, क्योंकि तुमने अपने दास को
प्रभु की शपथ दिलाकर अपने साथ रिश्ता
कायम किया है। यदि मैंने कुछ जुर्म किा
है, तो मेरी जान ले लेना, बजाए इसके कि
अपने पिता के हाथ में मुझे सौंपे। 9 योनातान
बोला,"नहीं ऐसा न होगा। यदि मुझे यह सब
मालूम होता, तो क्या मैं तुम्हें बताता नहीं?
10 तब दाऊद ने योनातान से कहा, "यदि
तुम्हारा पिता तुम्हें सख्ती से उत्तर दे तो
मुझे कौन बताएगा?" 11 योनातान ने दाऊद
से कहा,"चलो हम दोनों मैदान तक चलें।"
और वे वहाँ से चल भी दिए। 12 योनातान
दाऊद से बोला,"इस्राएल के प्रभु की शपथ,
कल या परसों (जब भी) मैं अपने पिता का
भेद पाता हूँ, तब यदि दाऊद की भलाई
देखूँ, तो क्या किसी को भेज कर तुम्हें न
बताऊँगा। 13 यदि मेरा पिता तुम्हारा नुकसान
करना चाहे और तुम्हें खबर न दूँ, तो प्रभु
योनातान ही को सज़ा दे। अब प्रभु तुम्हारे
साथ वैसा रहे, जैसा मेरे पिता के साथ रहे।
14 यदि मैं ज़िन्दा बचा रहूँ, तो क्या तुम मुझ
पर प्रभु की तरह दया नहीं दिखाओगे, ताकि
मैं न मरूँ? 15 और मेरे परिवार पर से तुम्हारी
मेहरबानी कभी न हटे। हाँ तब भी नहीं जब
प्रभु दाऊद के सभी दुश्मनों को खत्म कर
डाले।" 16 इस तरह योनातान ने दाऊद के
साथ यह वाचा बाँन्धी कि, "प्रभु, दाऊद
के दुश्मनों से बदला ले।" 17 अपने प्यार के
कारण योनातान ने फिर से उस से वायदा
करवाया, क्योंकि अपनी जान के बराबर वह
प्रेम करता था। 18 फिर योनातान बोला,"कल
नया चाँद है, और तब तुम्हारी गैरहाज़िरी
महसूस की जाएगी, क्योंकि तुम्हारी कुर्सी
खाली रहेगी। 19 तीन दिन तक छिपे रहने के
बाद जल्द आ जाना और एजेल नाम के पत्थर
के पास ठहरना। 20 तब मैं उसके पास ठहराए
निशान पर तीन तीर चलाऊँगा। 21 मैं लड़के
को भेजूँगा कि, वह तीर ढूँढे। यदि मैं खास
तरीके से कहूँ कि फलां जगह तीर हैं, तो
आओ, तब तुम आ जाना। प्रभु के जीवन की

शपथ, तुम बचे रहोगे और किसी तरह का
नुकसान न होगा। 22 लेकिन यदि मैं लड़के
से कहूँ कि तीर उसके उस पार है, तब तुम
चले जाना, क्योंकि प्रभु ने तुम्हें विदा किया
है। फिर जिस वाचा के बारे में हमने बातचीत
की है, वह हमेशा तक बनी रहे। 23 उस वाचा
के बारे में हमने बातें की हैं, याहवे हम दोनों
के बीच में रहे। 24 इसलिए दाऊद मैदान में
छिप गया। नए चाँद के वक्त राजा खाने के
लिए बैठा। 25 योनातान और अब्नेर शाऊल
के पास बैठ गए। लेकिन दाऊद की जगह
खाली रही। 26 उस दिन शाऊल चुप रहा।
उसने सोचा शायद ऐसा यों ही है इसके पीछे
कोई खास कारण नहीं है। वह शुद्ध नहीं है।
27 अगले नए चाँद पर फिर ऐसा हुआ, तब
शाऊल ने अपने बेटे योनातान से पूछा,"क्या
वजह है, यिशै का बेटा दाऊद कल भी खाने
पर नहीं आया और न आज ?" 28 योनातान
बोला,"उसने मुझ से गिड़गिड़ाकर छुट्टी माँगी
थी। 29 उसने कहा था, मुझे जाने दो क्योंकि
हमारे यहाँ पारिवारिक बलिदान का इन्तज़ाम
किया गया है। मेरे भाई ने भी मुझे आदेश
दिया है कि मैं जाऊँ। इसलिए वह खाने पर
मौजूद नहीं है। 30 तब शाऊल को योनातान
पर गुस्सा आ गया और बोला, हे बलवई
बुरी औरत के बच्चे, क्या तुम्हें मालूम नहीं
कि तुम अपने और अपने माँ के नंगेपन की
शर्म के लिए यिशै के बेटे दाऊद को चुन
रहे हो ? 31 क्योंकि जब तक वह ज़िन्दा है
तब तक न तुम और न तुम्हारा राज्य बन
सकेगा। इसलिए लोगों को भेज कर उसे
बुलवा लो। 32 लेकिन योनातान बोला,"ऐसा
क्यों? उसने ऐसा क्या किया है ? 33 यह सुनते
ही शाऊल ने भाले से उस पर वार किया।
तभी से योनातान समझ गया कि उसके पिता
ने दाऊद को मार डालने का इरादा कर लिया
है। 34 तभी योनातन बड़े गुस्से में मेंज से उठ
गया। उसने नए चांद के दूसरे दिन भी खाना
नहीं खाया, क्योंकि दाऊद के बेईज्जत किए
जाने के कारण वह दुखी था। 35 दाऊद को
दिए गए वचन के अनुसार सुबह योनातान
अपने साथ एक लड़के को लेकर निकल
गया। 36 उसने लड़के से कहा, "दौड़ो और
जो तीर मैं छोड़ूँगा उसे उठा कर लाना।"जब
वह दौड़ ही रहा था, उसने एक तीन छोड़ा,
जो उसके आगे निकल गया। 37 उस तीर के
पास वह लड़का पहुँचा ही था कि योनातान ने
पीछे से उसे पुकारा, "क्या तीर तुम्हारी उस
ओर नहीं है ? 38 उसे फुर्ती करने को उसने
कहा और वह तीर उठाकर वापस आ भी
गया। 39 लेकिन लड़के को भेद नहीं मालूम
था। भेद तो दाऊद और योनातान जानते थे।
40 तब अपने तीर कमान योनातान ने लड़के
को दिए और नगर पहुँचा देने को कहा।
41 लड़के के जाने के बाद दाऊद दक्षिण की
ओर से उठा और मुँह के बल गिर कर
तीन बार दण्डवत् किया। फिर एक दूसरे
का आलिंगन किया और सो गए। 42 आखिर
में योनातान दाऊद से बोला, "संभल कर
जाओ"। हमने प्रभु के सामने वायदा किया है,
कि वह मेरे -तुम्हारे बीच और हमारी पीढ़ियों
के बीच हों।" तब वह उठा और चल दिया।
योनातान भी नगर में वापस आ गया।

21 तब दाऊद नोब में अहीमेलेक
पुरोहित के पास आया। अहीमेलेक
डरते-डरते दाऊद से मिलने आया और
कहा,"तुम अकेले क्यों आए हो ? 2 दाऊद
बोला,"एक खास काम पर राजा ने मुझे भेजा
है और मुझे आदेश मिला है कि किसी को न
बताऊँ। मैंने जवानों को किसी जगह जाने को
कहा है। 3 अब बताओं, तुम्हारे हाथ में क्या है

? तुम मुझे पाँच रोटियां या जो कुछ मिले वही
देना। 4 पुरोहित बोला,“मेरे पास साधारण
रोटियाँ नहीं है, लेकिन भेंट चढ़ाई गई रोटियाँ
है। केवल यह ध्यान रहे, कि जवानों ने अपने
आप को स्त्रियों से अलग रखा हो।” 5 तब
दाऊद पुरोहित से बोला, इसमें कोई दो राय
नही, जैसे हमेशा मेरी यात्रा में होता रहा है,
इस बार भी उन्हें पास नहीं आने दिया गया।
जब कि साधारण यात्रा में भी जवानो के
पात्र पवित्र रहते है तो आज और ज़्यादा क्यों
न रहेंगे ? 6 इसलिए पुरोहित ने वह रोटी दे
दी, क्योंकि उसके अलावा और कोई रोटी
नही थी। 7 उस दिन वहाँ पर शाऊल का
एक कर्मचारी वहाँ था प्रभु के सामने वह
काफी समय तक था। उसका नाम एदोमी
दोएग था। वह शाऊल के चरवाहों के ऊपर
अधिकारी था। 8 दाऊद अहीमेलेक से बोला,
“क्या यहाँ तलवार या भाला मिल सकता है।
राजा के ज़रूरी काम से आने के कारण मै
अपने हथियार न ला सकता। 9 तब याजक
ने कहा, “जिस पलिश्ती को तुमने मारा था,
उसकी तलवार लिपटी हुई एपोद के पीछे
रखी है। यदि चाहो तो वह ले लो। “दाऊद ने
कहा ठीक है, मुझे दो।” 10 उसी दिन दाऊद
शाऊल को छोड़ गत के राजा आकीश के
पास भाग आया। 11 आकीश के कर्मचारी
बोले,“क्या यह उस देश का राजा दाऊद
नहीं? क्या इसी के लिए लोगों ने नाच-नाच
गीत नहीं गाया था कि, “शाऊल ने मारा
हजारों को, दाऊद ने मारा लोखों को?” 12 ये
शब्द दाऊद के दिल पर लग गए और वह
गत के राजा आकीश से डर गया। 13 इसलिए
उसने उन लोगो के सामने पागलपन का ढोंग
किया। वह फाटक के पल्लों पर लकीरे खींचते
और दाढ़ी पर लार बहाने लगा। 14 आकीश ने
अपने कर्मचारियों से कहा, “देखो, ऐसा लग
रहा है यह मानसिक रोगी है। इसे तुम यहाँ
क्यों लाए हो ? 15 क्या मेरे पास मानसिक
रोगियों की कमी है? क्या तुम उसे मेरे घर के
भीतर रखना चाहते हो।”

22 इसके बाद दाऊद वहाँ से भागा
और अदुल्लाम गुफ़ा में छुप गया।
इसके भाइयों और दूसरे रिश्तेदारों को यह
खबर मिलने पर वे उस से भेंट करने गए।
2 मुसीबत के मारे, कर्जदार, और नाखुश लोग
उसके पास इकट्ठे हुए और दाऊद उनका
मुखिया बन गया। वहाँ तकरीबन चार सौ
आदमी थे। 3 मोआब के मिस्पा में जाकर
वह वहाँ के राजा से बोला,“मेरे पिता को
यहाँ पर आने और रहने दो, जब तक मुझे
यह न मालुम हो जाए, कि प्रभु मेरे लिए
क्या करेंगे।” 4 तब ऐसा ही उसने किया
जब तक दाऊद उस किले में रहा। 5 फिर
गाद नबी ने दाऊद से कहा, “उसे किले
को छोड़ दो और यहूदा देश में रहो। 6 इसी
दौरान शाऊल को मालूम पड़ा कि दाऊद
और उसके साथियों का अता पता लग चुका
है। वह उस समय गिबा पहाड़ी पर झाऊ
के पेड़ के नीचे भाला लेकर बैठा हुआ था।
उसके सभी कर्मचारी उसके चारों ओर खड़े
थे। 7 तब शाऊल ने अपने लोगों से कहा,“हे
बिन्यामीनियों क्या यिशै का बेटा दाऊद तुम्हें
खेत और अंगूर के बगीचे देगा? क्या वह तुम
लोगों को सहस्त्रपती और शतपति बनाएगा।
8 तुम लोगों ने मेरे खिलाफ़ योजना बनायी।
मुझे किसी ने यह खबर न दी कि मेरे बेटे
ने दाऊद के साथ वाचा बान्धी है।और न
ही किसी को मेरे लिए बुरा लगा। यह भी
समाचार नहीं दिया कि मेरे बेटे ने मेरे विरोध
में एक कर्मचारी को बैठाया।” 9 तब एदोमी
दोएग ने शाऊल के कर्मचारियों के पास

खड़ा था, कहा,“मैंने यिशै के बेटे को नोब
में अहीतूब के बेटे अहीमेलेक के पास आते
देखा। 10 उसने उसके लिए प्रभु से पूछा, और
उसे खाने की चीज़े दीं तथा पलिश्ती गोलियत
की तलवार दी। 11 तब राजा ने अहीतूब के
बेटे अहीमेलेक पुरोहित, उसके पिता के पूरे
परिवार तथा नोब के पुरोहितों को बुलवाया।
वे सभी राजा के पास आए भी। 12 तब शाऊल
बोला,“हे अहीतूब के बेटे सुनो।” 13 शाऊल
ने कहा,“तुमने यिशै के बेटे के साथ मिलकर
मेरे खिलाफ़ योजना क्यों बनाई ?” तुमने उसे
रोटी और तलवार दी और उसके लिए प्रभु
से पूछा, ताकि वह छिपकर मुझ पर हमला
करे ?” 14 तब अहीमेलेक ने राजा से कहा,
“तुम्हारे कर्मचारियों में तुम्हारे दामाद दाऊद
की तरह ईमानदार और कौन है?” वह तो
तुम्हारे रक्षा सैनिक का भी मुखिया है। वह
राज घराने में इज़्ज़तदार इन्सान है। 15 क्या
मैंने आज ही उसके लिए पूछना शुरू किया
है? नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। आप
मुझ पर और मेरे पिता के घराने के किसी
सदस्य पर आरोप न लगाए। मैं इन सभी बातों
के बारे में बेगुनाह हूँ।” 16 लेकिन राजा ने
कहा,“अहीमेलेक तुम और तुम्हारे परिवार
को मौत की सज़ा मिलेगी। 17 तब राजा
ने अपने रक्षकों को आदेश दिया,“पुरोहितों
को मार डालो, क्योंकि उन्होंने भी दाऊद
की मदद की थी। उन्हें मालूम था कि
दाऊद भागा जा रहा है, लेकिन मुझे सूचना
नहीं दी।” लेकिन राजा के अंगरक्षकों ने
राजा का आदेश नहीं माना। 18 तब राजा
दोएग से बोला, “आगे बढ़ो और पुराहितों
को मारो।” तब एदोमी दोएग ने वैसा ही
किया। उस दिन उसने पचासी लोगों की
जान ली। 19 और पुरोहितों के नगर नोब को
उसने महिलाओं-पुरुषों, और बालबच्चों,
और दूध पीते हुओं, और बैलों, गदहों, और
भरड़-बकरियों समेत तलवार से घात किया
20 लेकिन अहीतूब के बेटे अहीमेलेक का
एब्यातार नाम का एक बेटा बच गया और
दाऊद के पास भाग गया। 21 तब एब्यातार ने
दाऊद को खबर दी, कि शाऊल ने परमेश्वर
के पुरोहितों को मार डाला है। 22 . दाऊद ने
एब्यातार से कहा, “जिस दिन एदोमी वहाँ
था, उसी दिन एदोमी दोएग वहाँ था, उसी
दिन मैं समझ गया कि वह ज़रूर शाऊल को
बता देगा।तुम्हारे पिता के पूरे घराने के बर्बाद
किए जाने का कारण मैं हूँ। 23 इसलिए तुम
बिना डरे मेरे साथ रहो। जो तुम्हारी जान का
प्यासा है, वही मेरी जान को लेना चाहता है।
लेकिन मेरे साथ रहने से तुम भी बचे रहोगे।”

23 तब लोगों से दाऊद को मालूम
पड़ा कि पलिश्ती कीला नगर के
खिलाफ़ लड़ाई छेड़ चुके हैं। वे खलिहानों
की लूट-पाट भी कर रहे हैं। 2 इसलिए दाऊद
ने प्रभु से पूछा,“क्या मैं जाकर पलिश्तियों
को मारूँगा। प्रभु का जवाब था, जाओ और
कीला को आज़ाद भी करा लो।” 3 लेकिन
दाऊद के साथी बोले,“हम लोग तो यहीं डरे
हुए हैं और यदि कीला जाकर हमला बोले,
तो हमारा डर और भी बढ़ जाएगा। 4 दाऊद
ने फिर से प्रभु से पूछा,“फिर से उसे वही
जवाब मिला कि कीला पर आक्रमण करें।
मैं पलिश्तियों को तुम्हारे सुपुर्द कर दूँगा।
5 दाऊद और उसके साथियों ने बात मान ली।
उन्होंने जाकर बहुत लोगों को मारा, जानवरों
को हाँक लिया। इस तरह कीला के रहने
वालों को आज़ाद किया। 6 जब अहीमेलेक
का बेटा एब्यातार कीला में दाऊद के पास
मारा आया तो वह अपने हाथ में एपोद लिए
हुए था। 7 शाऊल को यह मालूम पड़ने पर कि

दाऊद कीला मे आया है, तो सोचा कि प्रभु
ने इसे मेरे हाथ कर दिया है। 8 इसलिए उसने
सभी को लड़ाई के लिए बुलाया कि दाऊद
और साथियों को घेर लें। 9 दाऊद को मालूम
था कि शाऊल उसे नुकसान पहुँचाना चाह
रहा था। इसलिए उसने एब्यातार पुरोहित
से एपोद मँगवाया। 10 इसके बाद दाऊद ने
कहा, “हे प्रभु, इस्राएल के प्रभु मैंने सुना है
कि शाऊल मेरी वजह से कीला नगर को
बर्बाद करने की सोच रहा है। 11 क्या कीला
के लोग मुझे उसको सुपुर्द कर देगे? क्या
वह यहाँ आएगा? कृपा करके मुझे बताईए।”
तब प्रभु का उत्तर था, “हाँ वह आएगा।”
12 तब दाऊद का सवाल था, “क्या कीला
के लोग मुझे और मेरे साथियों को शाऊल
के हाथ में दे देंगे? प्रभु ने कहा, “हाँ वे
दे देंगे।” 13 तब दाऊद और उसके छः सौ
लोग वहाँ से भागे। शाऊल को यह बात
मालूम होने पर उसने दाऊद का पीछा करना
छोड़ दिया। 14 दाऊद जंगलो में छिपता रहा।
शाऊल भी उसकी खोज करता रहा। लेकिन
प्रभु ने उसे उसके हाथ में पड़ने नहीं दिया।
15 जीपी के जंगल में दाऊद को जानकारी
मिली कि उसे ढूँढने के लिए शाऊल निकल
पड़ा। 16 शाऊल का बेटा योनातान एक दिन
होरेश गया, जहाँ दाऊद था। उसने उसकी
हिम्मत बढ़ाई। 17 वह उसे से बोला,“डरो
मत क्योंकि तुम मेरे पिता के हाथ में न
पड़ सकोगे। तुम इस्राएल के राजा बनोगे
और मेरा पद तुम्हारे बाद होगा। मेरे पिता
शाऊल को भी यह सच्चाई पता है। 18 दोनों ने
मिलकर उसी वक्त प्रभु को उपस्थित जानते
हुए वचन दिया (या वाचा बांधी)। इसके बाद
दाऊद वहीं रहा लेकिन योनातान चला गया।
19 कुछ समय बाद जीपी लोग गिबा आए
और शाऊल से बोले,“क्या आप को मालूम
है कि दाऊद होरेश के गढ़ों में, यशीमोन के
दक्षिण में हकीला पहाड़ी पर छिपा रहता
है?” 20 इसलिए आप फैसला लीजिए कि
कब आएँगे। आपके हाथ उसे पकड़वाने का
काम हम करेंगे। 21 शाऊल ने कहा,“तुम पर
प्रभु का आशीर्वाद हो, क्यों कि तुम मेरे लिए
तरस की भावना रखते हो। 22 अब जाओ,
खोज-बीन करके उसके ठिकाने का पता
लगाओ और यह भी कि किसने उसे वहाँ
देखा है। मुझे समाचार मिला है, कि वह बहुत
चतुर है। 23 इसलिए मालूम करो कि वह
छिपता कहाँ है। फिर मेरे पास आओ, हम
लोग साथ ही चलेंगे। मैं हज़ारों में से भी उसे
ढूँढ लाऊँगा। 24 तब वे उठे और इससे पहले
कि शाऊल वहाँ जाए, दाऊद और उसके
साथी माओन के जंगल में थे जो यशीमोन
की दक्षिणी और अराब में था। 25 शाऊल के
वहाँ जाने के बारे में दाऊद को खबर लग
गई थी। वह पहाड़ी से उतरकर माओन के
जंगल में रहा। यह मालूम होते है शाऊल ने
माओन के इलाके में दाऊद का पीछा किया।
26 एक पहाड़ की ओर शाऊल और उसके
साथी तथा दूसरी ओर दाऊद और साथी।
27 एक समाचार देने वाले ने आकर शाऊल से
कहा, “जल्दी करें, क्योंकि पलिश्तियों ने देश
पर हमला बोल दिया है। 28 इसलिए शाऊल
ने दाऊद का पीछा करना छोड़ दिया और
पलिश्तियों का मुकाबला करने चल पड़ा।
इसलिए उन्होंने उस जगह का नाम सेला
हम्महलकोत रख दिया। 29 वहाँ से दाऊद
चढ़कर एनगदी के किलों में रहने लगा।

24 पलिश्तियों से लड़ लौटने पर
शाऊल को मालूम हुआ, कि दाऊद
एनगदी के जंगल में है। 2 तब शाऊल तीन
हज़ार चुने आदमियों के साथ दाऊद और
उसके साथियों की खोज करने जंगली बकरों

की चट्टान के सामने तक पहुँचा। 3 रास्ते में
वह भेड़ शालाओं के पास पहुँचा। वहाँ एक
गुफा में शाऊल शौच के लिए गया। इसी
गुफा में दाऊद और उसके साथी छुपे हुए थे।
4 दाऊद के साथी बोल उठे, "सुनो आज ही
वह दिन है, जिसके बारे में प्रभु ने कहा है
कि मैं तुम्हारे दुश्मनों का तुम्हारे सुपुर्द कर
दूँगा। ताकि अपनी मर्जी से मुताबिक तुम
कर सको। तभी दाऊद उठा और शाऊल
के पहिरावे की छोर में से खामोशी से कुछ
हिस्सा काट लिया। 5 यह करने के बाद
दाऊद का मन कचोटने लगा। 6 वह अपने
साथियों से बोला, "ऐसा न हो कि मैं प्रभु के
ठहरए (अभिषिक्त) राजा के खिलाफ़ कुछ
बुरा करूँ।" 7 ऐसा वह कर उसने अपने लोगों
को समझाया। और शाऊल के खिलाफ़ कुछ
न करने दिया। तभी शाऊल वहाँ से उठा
और अपना रास्ता लिया। 8 तुरन्त दाऊद भी
गुफा से निकला और शाऊल को आवाज़
लगाई, "हे मेरे मालिक और राजा।" शाऊल
के मुड़ते ही दाऊद उसके पैर पर गिर पड़ा।
9 दाऊद ने शाऊल से कहा,"जो लोग कहते हैं
कि दाऊद आपका नुकसान करना चाहता है
आप उनकी सुनते क्यों है?" 10 देखो आज
प्रभु ने गुफ़ा में तुम को मेरे हाथ कर ही
दिया था। कुछ लोग चाह रहे थे कि तुम्हें
मार डाला जाए, लेकिन मुझे दया आ गयी।
मैंने कहा,"राजा पर हमला नहीं करूँगा, वह
प्रभु का अलग किया हुआ अभिषिक्त है।
11 हे मेरे पिता, देखिए, मेरे हाथ में आपके
बागे की छोर का एक हिस्सा है, लेकिन
आपकी जान नहीं ली। इस से आप जान
लें कि मेरे मन में आपके लिए कोई कपट
नहीं है। हालांकि आप मेरी जान के प्यासे
हैं। 12 प्रभु तुम्हारे और मेरे बीच फैसला करें
और प्रभु आप से मेरा बदला लें। लेकिन मैं
आपका कुछ नुकसान न करूँगा। 13 पुरानी
एक कहावत है,"बुरे इन्सान ही से बुराई
निकलती है, लेकिन मैं आपके खिलाफ़ कुछ
न करूँगा। 14 आप किस के पीछे पड़े हैं?
एक मरे कुत्ते या पिस्सू के ? 15 इसलिए प्रभु
ही न्याय करें। वह मेरी ओर से लड़ें और
आपके हाथ में पड़ने से बचाएँ। 16 दाऊद की
इन बातों को सुन कर शाऊल बोला,"हे मेरे
बेटे क्या मैं तुम्हें सुन रहा हूँ।" यह कह कर
शाऊल जोर-ज़ोर से रोने लगा। 17 वह दाऊद
से बोला,"तुम मुझ से ज़्यादा बेहतर आदमी
हो। मैंने तुम्हारे साथ बुराई की है, लेकिन
तुमने भलाई। 18 आज तुमने साबित भी दर
दिया है कि तुमने मेरे साथ अच्छा बर्ताव
किया है। आज तो तुम मुझे मार सकते थे,
लेकिन फिर भी ऐसा न किया। 19 कभी भी
अपने दुश्मन को पा कर कोई छोड़ता नहीं
है। जो कुछ तुमने आज मेरे साथ किया है
उसके बदले प्रभु तुम्हारी भलाई करे। 20 मुझे
अच्छी तरह से मालूम है कि एक दिन तुम
इस्राएल के राजा बनोगे। 21 तुम वायदा करो
कि मेरे वंश के किसी व्यक्ति की तुम जान
नहीं लोगे और मेरे पिता का नाम मिटाओगे
नहीं।" 22 तब दाऊद ने शाऊल से वायदा
किया। शाऊल इसके बाद अपने घर वापस
चला गया। दाऊद अपने संगी-साथियों के
साथ गढ़ में।

25 शमूएल की मौत के बाद सारे
इस्राएल ने शोक मनाया। रामा में
ही उसे दफ़ना भी दिया गया। तभी दाऊद
पारान नामक जंगल चला गया। 2 माओन में
एक अमीर आदमी था जिसका व्यवसाय
कर्मेल में था। उसके पास तीन हज़ार भेड़े
और एक हज़ार बकरियाँ थी। वह कर्मेल में
उनका ऊन निकाला करता था। 3 इस आदमी

का नाम था नाबाल और उसकी पत्नी का
अबीगैल। वह महिला बुद्धिमान होने के साथ
खूबसूरत भी थी। नाबाल कठोर और दुष्ट
था। वह कालेब के वंश का था। 4 दाऊद
को मालूम पड़ा कि वह जंगल में भेड़ों का
ऊन कतर रहा है। 5 उसने कुछ जवानों को
यह कह कर वहाँ भेजा, कि उसे सलाम
कहना। 6 तुम कहना,"जुग-जुग जियो और
तुम्हारा तथा परिवार का भला हो, 7 मैंने
सुना है कि उन कतरने वाले तुम्हारे पास
आए हैं। तुम्हारे चरवाहे हमारे साथ हैं और
हमने उनकी बेइज़्ज़ती नहीं की है। उनकी
सभी चीज़ें सुरक्षित भी रहीं। 8 अपने जवानों
से पूछो , वे तुम्हें बतलाएँगे, इसलिए मेरे
जवानों पर तुम्हारी कृपा बनी रहे, क्योंकि
हम खुशी के समय तुम्हारे पास आए हैं।
मेहरबानी से अपने इन दासों को तथा अपने
बेटे, दाऊद को जो कुछ तुम्हारे हाथ लगे
उसे खुशी से दो।" 9 दाऊद के जवानों ने
ये बातें, नाबाल से कहीं और वे ठहरे रहे।
10 तब नाबाल ने दाऊद के सेवकों को जवाब
दिया,"दाऊद और यिशै का बेटा है कौन
? आज कल बहुत से सेवक है जो अपने
मालिक को छोड़ देते हैं। 11 क्या मैं अपना
खाना, जो मैंने अपने उन कतरने वालों के
लिए रखा है, ऐसों को दे दूँ, जिन्हें जानता
तक नहीं हूँ।" 12 इसलिए दाऊद के सेवक
वापस चले गये और सब कुछ दाऊद को
बताया। 13 तब दाऊद बोला,"अपनी अपनी
तलवार ले लो।" सभी ने ऐसा किया। इस
तरह तकरीबन चार सौं आदमी दाऊद के
साथ निकले और दो सौ समान के पास ही
रह गए। 14 एक जवान ने नाबाल की पत्नी
अबीगैल को खबर दी, "दाऊद ने अपने
लोगों को अच्छी मनसा से मालिक के पास
भेजा था। लेकिन मालिक ने उन लोगों की
बेइज़्ज़ती कर डाली। 15 लेकिन उन लोगों ने
हमारे ही साथ अच्छा बर्ताव किया था। जब
तक हम लोग मैदानों में थे। हमारी कोई चीज़
खोई नहीं थी और न ही किसी ने बेइज़्ज़ती
की थी। 16 हम जब तक वहाँ अपने मवेशी
चराते रहे, वे खुद हमारे लिए सुरक्षा थी।
17 इसलिए अब सोचो, कि क्या किया जाए
क्योंकि उन्होंने हमारे मालिक और उसके
घराने के खिलाफ़ बुराई करनी चाही है।
वह इस लायक भी नहीं कि उससे बात की
जाए। 18 तब अबीगैल ने जल्दी से दो सौ
रोटी, दो मश्कों में दखमधु, पाँच भेड़ों का
पका हुआ मांस, पांच सआ भुना अनाज,
किशमिश के सौ गुच्छे और अंजीर की दौ
सौ टिकिया गदहों पर लदवायी। 19 फिर वह
अपने जवानों से बोली, "तुम आगे बढ़ो, मैं
पीछे-पीछे आती हूँ।" उसने अपने पति को
कुछ नहीं मालूम होने दिया। 20 वहाँ पहुँचने
पर जब वह गदहे से उतर रही थी, तभी
दाऊद और उसके साथी भी चले आ रहे थे
और वहीं उनकी मुलाकात हो गई। 21 दाऊद
बोला, "मैने बेकार ही में जंगल में इस आदमी
को सुरक्षा दी, लेकिन इसने मेरी भलाई के
बदले मुझ से बुराई की। 22 सुबह तक यदि
मैं एक लड़के को ही ज़िन्दा छोड़ दूँ तो प्रभु
मेरे दुश्मनों के साथ ऐसा और इससे ज़्यादा
करें। 23 अबीगैल गदहे से उतरकर दाऊद
के पैरों पर गिर पड़ी, 24 और बोली,"मेरी
सुनिये, मैं सारी गलती को अपने ऊपर लेती
हूँ। 25 आप उस बेवकूफ की बातों पर ध्यान
न दें। जैसा उसका नाम है, वैसे ही काम भी
हैं। मेरी भेंट तो तुम्हारे भेजे जवानों से हुई
तक नहीं थी? 26 जबकि तुम्हें खून बहाने
और बदला लेने से प्रभु ने रोका है, अब
तुम्हारे सभी दुश्मन और तुम्हारा नुकसान
चाहने वाले, नाबाल की तरह ठहरें। 27 मैं

कुछ ईनाम लायी हूँ, जिसे आप इन जवानों
को दे, जो सही रास्ते पर चलते हैं। 28 आप
अपनी दासी का अपराध माफ़ करें, क्योंकि
प्रभु मेरे आपके लिए स्थायी घर बनाएँगे।
क्योंकि आप प्रभु के लिए युद्ध करते हैं। आप
जीवन भर गलत राह पर नहीं चलेंगे। 29 यदि
कोई तुम्हारा पीछा करे और जान लेना चाहे,
तो प्रभु आप को बचाए और दुश्मनों को
ऐसा फेंके जैसे गोफ़न से पत्थर फेंकते है?
30 जब प्रभु अपनी कही बातों को पूरा करेंगे,
जिन्हें पहले कहा था और इस्राएल का राजा
बना देंगे। 31 तब आपका मन कचोटेगा नहीं,
कि आपने बेवजह खून बहाया और अपना
बदला खुद ही लिया। फिर जब प्रभु आप
का भला करे, मुझे ज़रूर याद करना।”
32 तब दाऊद ने अबीगैल से कहा,“प्रभु का
धन्यवाद हो, जिन्होने यह मौका दिया, कि
मैं तुम से मिल सका। 33 तुम्हारी समझ बहुत
ऊँची है कि तुम्हारी वजह से मेरे हाथ से खून
नहीं बहा। 34 इस्राएल के प्रभु परमेश्वर ने
मुझे रोक लिया नहीं तो एक एक की आज
जान चली जाती।” 35 उस ईनाम को जो वह
लायी थी, दाऊद ने लिया और कहा,“जाओ
शान्ति से। मैंने तुम्हारी कही बात को मान
लिया है।” 36 जब अबीगैल घर लौटी तो देखा
कि नाबाल नशे में चूर है। इसलिए सुबह
तक उसने कुछ नहीं कहा। 37 सुबह नाबाल
का नशा उतर जाने के बाद उसने सब कुछ
बताया। वह सब सुन कर वह ठण्डा पड़
गया। 38 दस दिन बाद, प्रभु ने उसके प्राण
ले लिए। 39 दाऊद के कान में यह बात पड़ने
पर वह कह उठा, “प्रभु का शुक्रिया, जिन्होनें
मेरे बेइज़्ज़ती का मुकदमा लड़ा उन्होंने मुझे
बदला लेने से रोका है। प्रभु ने नाबाल की
बुराई को उसी पर लौटा दिया है।“इसके
बाद दाऊद ने अबीगैल के पास विवाह का
प्रस्ताव भेजा। 40 दाऊद के सेवक यह कहने
अबीगैल के पास गए। 41 यह सुनकर वह
बोली,“मैं तो बहुत छोटी हूँ।” 42 फिर वह
जल्दी से उठकर गदहे पर सवार हुई और
अपने पांच सहेलियों के साथ उन सेवकों के
पीछे चल दी। बाद में वह दाऊद की पत्नी
हो गई। 43 यिज्रेल की अहिनोअम को भी
दाऊद ने ब्याह लिया। 44 शाऊल ने अपनी
बेटी दाऊद की पत्नी मीकल को लैश के
बेटे गल्लीमवासी पलती की पत्नी होने के लिए
दिया।

26 एक दिन जीपवासियों ने गिबा
में आकर शाऊल से कहा,“दाऊद
यशीमोन के सामने हकीला की पहाड़ी में
छिपा हुआ है। 2 यह सुन शाऊल उठ कर
जीप के जंगल में गया। उसके साथ तीन
हज़ार लड़ने वाले लोग थे। वह दाऊद को
ढूँढ़ना चाहता था। 3 हकीला के पहाड़ पर
यशीमोन के सामने रास्ते में उन्होंने पड़ाव
डाला। इस वक्त दाऊद वही था। जब उसे
खबर मिला कि शाऊन उसका पीछा कर रहा
है। 4 तब जासूस भेजकर मालूम किया कि
यह खबर सचमुच में सही है या नहीं? 5 तब
दाऊद वही पहुँच गया, जहाँ शाऊल था।
उसने उस जगह को देखा, जहाँ शाऊल अपने
सेनापति अब्नेर के साथ आराम कर रहा
था। चारो तरफ योध्दा थे। 6 तब दाऊद हित्ती
अहीमेलेक और सरूयाह के बेटे योआब के
भाई अबीशै से बोला, “मेरे साथ शाऊल के
डेरे में कौन चलेगा ?” अबीशै ने कहा, “मै।”
7 इसलिए दाऊद और अबीशै रात मंे उन
फौजियों के पास गए। उन्होंने वहाँ शाऊल
को सोते देखा। उसका भाला उसके सिरहाने
जमीन में गढ़ा हुआ था। अब्नेर और दूसरे
योध्दा चारों ओर सो रहे थे। 8 तभी अबीशै

बोल उठा, “दाऊद, तुम्हारे दुश्मन को प्रभु
ने तुम्हारे हवाले कर दिया है। मुझे इजाज़त
दो कि मैं वार करूँ।” 9 दाऊद ने उसे मना
किया क्योंकि शाऊल प्रभु का अलग किया
हुआ जन है। उसको मारना अपराध होगा।
10 फिर दाऊद ने कहा, “उसका समय आने
पर प्रभु ही उसे मारेंगे या वह युद्ध में मरेगा।
11 प्रभु मुझे उसके खिलाफ़ हाथ उठाने से
बचाएँ। चलो, उसके सिरहाने गड़ा हुआ भला
और पानी की सुराई उठा कर चले।” 12 सोए
हुए गहरी नींद में थे, और ये लोग वह सब
उठा कर वहाँ से चम्पत हो गए। 13 वहाँ से
निकलने के बाद दाऊद पाकर दूसरे पर्वत की
चोटी पर खड़ा हो गया। उनके बीच बड़ी दूरी
थी। 14 तब दाऊद वहाँ खड़ा होकर अब्नेर
को पुकारने लगा, “तुम सुन क्यों नहीं रहे
हो ?” अब्नेर ने पूछा, “तुम कौन हो जो
राजा को पुकार रहे हो?” 15 दाऊद अब्नेर से
बोला, “क्या तुम आदमी नहीं हो? इस्राएल में
तुम्हारी तरह और कौन है? फिर तुमने अपने
मालिक राजा को बचाया क्यों नहीं? एक
आदमी उसे मारने के लिए गया था। 16 यह
तुमने अच्छा नहीं किया तुम मौत की सज़ा
के लायक हो। इसलिए कि तुमने प्रभु के
ठहराए राजा की देखःरेख नहीं की। राजा का
भाला और पानी की सुराही कहाँ है, देखो।
17 दाऊद की आवाज़ पहचान के कारण,
शाऊल ने कहा, “मेरे बेटे क्या यह तुम्हारी
आवाज़ है?” दाऊद ने जवाब दिया, “हाँ
मालिका।” 18 फिर उसने कहा, मेरे मालिक
आप मेरे पीछे क्यों पड़े है, मैंने ऐसा क्या
किया है? 19 इसलिए मेरी बात सुनिए। यदि
प्रभु ने आप को ऐसा करने के लिए कहा
है, तो ठीक है। यदि इन्सानों ने आप को
उकसाया है, तो इसका बदला उन्हें मिले,
क्योंकि उन्होंने मुझे भागने पर मजबूर किया
ताकि मेरा हिस्सा (पद) मुझे न मिल सके।
वे कह चुके है, “जाओ दूसरे देवताओं की
पूजा करो।” 20 मेरा खून प्रभु की मौजूदगी
में दूर ज़मीन पर न बहे, क्योंकि इस्राएल
का राजा एक पिस्सू के पीछे पड़ा है, जिस
तरह से कोई पहाड़ पर तीतर का शिकार
कर रहा हो।” 21 तब शाऊल बोल उठा,
“मुझ से गुनाह हुआ है। हे मेरे बेटे, तुम लौट
जाओ। अब मैं तुम्हें नुकसान न पहुँचाऊँगा।
आज मैंने जाना है कि तुम्हारी निगाह में मेरा
जीवन कीमती है। मुझे बड़ी भूल हुयी है
और बेवकूफ़ी भी।” 22 दाऊद बोला,“राजा
के भाले को देख। कोई जवान अब यहाँ आए
और ले जाए। 23 प्रभु हर एक को उसकी
ईमानदारी और सच्चाई के मुताबिक बदला
देंगे। प्रभु ने आज आप को मेरे सुपूर्द कर दिया
था, लेकिन मैंने प्रभु के अभिषिक्त के विरोध
में कुछ न किया। 24 आज जैसे मैंने तुम्हारी
जान को कीमती जाना, वैसे ही मेरी जान प्रभु
की निगाह में कीमती हो और सारी मुसीबतों
से वह मुझे आज़ाद करें। 25 तब शाऊल ने
दाऊद से कहा, “मेरे पुत्र, तुम आशीषित
हो। तुम बड़े काम करोगे और जीत हासिल
करोगे। “इसके बाद दोनों ही ने अपना अपना
रास्ता लिया।

27 एक दिन दाऊद ने अपने मन ही
मन सोच लिया, “मुझे किसी भी
दिन शाऊल बर्बाद कर डालेगा। इसलिए
बेहतर यह होगा कि मैं पलिश्तियों के मुल्क
चला जाऊँ। ऐसा करने पर मुझे ढूँढते-ढूँढते,
शाऊल थक जाएगा और मैं बच सकूँगा।
2 इसके बाद ही वह अपने छैः सौ साथियों
के साथ गत के राजा माओक के बेटे अकीश
के पास चला गया। 3 दाऊद और उसके सभी
साथी भी अपने-अपने परिवार के साथ गत

में आकीश के पास रहने लगे। दाऊद अपनी
दोनों, पत्नियों अहीनोअम तथा अबीशैल के
साथ वहाँ रहने लगा। 4 जब शाऊल को
मालूम पड़ा कि दाऊद गत को भाग चुका है,
तब उसने उसकी खोज बन्द कर दी। 5 तब
दाऊद ने आकीश से कहा, "यदि तुम मुझ
पर दया करो, तो देश में कोई जगह दिला दो
ताकि मैं वही रहूँ। मैं राजधानी में नहीं रहना
चाहूँगा। 6 उस दिन आकीश ने उसे सिकलग
नगर दे दिया। इसलिए सिकलग यहूदा का
हिस्सा बना रहा। 7 इस तरह दाऊद वहाँ एक
साल चार महीनों तक पलिश्तियों के देश
में रहा। 8 एक दिन दाऊद ने अपने झुण्ड
के साथ गशूरियों, गर्जियों और अमालेकियों
पर हमला कर दिया। ये लोग पुराने समय
से उस इलाके में रहा करते थे जो शूर के
रास्ते से मिस्र तक फैला हुआ था। 9 दाऊद
ने इस देश पर हमला करके भेड़ बकरियों,
गाय-बैल, गदहे-गदहियों, ऊँट-ऊँटनियों और
कपड़े आदि को लूट लिया और फिर
लाकीश के पास गया। 10 आकीश ने सवाल
किया,"तुमने हमला कहाँ किया? दाऊद का
जवाब था,"यहूदा के नेगेव, यरहमेलियों के
नेगेव और केनियों के नेगेव पर।" 11 एक
आदमी और एक औरत तक को गत लाने
के लिए दाऊद ने ज़िन्दा नहीं छोड़ा था। वह
सोचता था कि कही दूसरों को यह कहने का
मौका न मिले कि जब से दाऊद पलिश्तियों
के देश में रहने लगा है, ऐसा ही कर रहा
है। 12 आकीश ने दाऊद पर इसलिए भरोसा
किया है कि उसने इस्राएलियों के सामने खुद
को घृणित बना डाला है। इसलिए वह हमेशा
के लिए मेरा दास बना रहेगा।

28 उसी समय में इस्राएल के खिलाफ़
लड़ने के लिए पलिश्ती इकट्ठे
हुए। आकीश दाऊद से बोला,"तुम्हें अपने
साथियों के साथ युद्ध में मेरी मदद करनी
पड़ेगी। 2 दाऊद ने आकीश से कहा, "बहुत
बढ़िया, तुम जान जाओगे कि तुम्हारा दास
क्या कर सकने के लायक है।" यह सूनकर
आकीश बोला,"ठीक है, मैं हमेशा के लिए
तुम्हें अपना रक्षा करने वाला बनाता हूँ।"
3 शमूएल मर चुका था और इस्राएलियों ने
बड़ा मातम किया था। उसे उसी के नगर रामा
में दफ़ना दिया गया था। तभी शाऊल ने देश
से सभी ओझों और भूत-सिध्दि वालों को
बाहर कर दिया था। 4 इसलिए पलिश्तियों ने
शूनेम में छावनी डाली और शाऊल ने गिलबो
में छावनी डाली। 5 पलिश्तियों की छावनी
देखकर शाऊल डर गया। 6 शाऊल ने चाहा
कि प्रभु उसे बताएँ लेकिन न स्वप्न न ऊरीम
न भविष्यद्वक्ता के जरिये से प्रभु ने जवाब
दिया। 7 तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से
कहा कि वे लोग किसी भूत सिध्दि करने
वाली महिला को लाएँ और वह उस से
पूछताछ कर सके। उसके लोगों ने समाचार
दिया कि एन्दोर में एक ऐसी महिला रहती
है। 8 तब शाऊल ने अपना भेष बदला। दो
आदमियों को अपने साथ लेकर उस महिला
के घर पहुँच गया। वहाँ जाकर उसने कहा,
"मेरे लिए भूतसिध्दि करके उस आदमी को
बुलाओ, जिसका मैं नाम तुम्हें बताऊँगा।"
9 वह बोली, "तुम्हे तो मालूम है कि शाऊल
ने सभी जादूगरों और टोन्हो को बर्बाद कर
डाला है, फिर तुम मेरे लिए क्यों मुसीबत
पैदा कर रहे हो?" 10 तब शाऊल ने उससे
यह प्रतिज्ञा की, "मैं वायदा करता हूँ कि
इसके लिए तुम्हें कोई सज़ा नहीं दी जाएगी।"
11 तब स्त्री ने पूछा, "मैं तुम्हारे लिए किस
को बुलाऊँ?" वह बोला, "शमूएल को।"
12 शमूएल को देखते ही वह स्त्री ज़ोर से

चिल्ला पड़ी, और शाऊल से बोली, “तुमने
मुझे धोखा दिया है, तुम तो शाऊल हो।”
13 तब राजा उस से बोला, “डरो मत, तुम
किस को देख पा रही हो?” उस स्त्री ने कहा,
“मैं एक देवता को पृथ्वी में से निकल कर
आता देख रही हूँ।” 14 उसने फिर पूछा,“वह
कैसा दिखता है?” स्त्री बोली, “वह बूढ़ा है
और चोगा पहने है।” तब शाऊल समझ गया
कि यह शमूएल ही है और उसने गिर कर
सिज़दा किया। 15 तब शमूएल बोला,“मुझे
यहाँ बुलाकर तुमने परेशान क्यों किया? और
शाऊल ने उत्तर दिया, “मैं एक बड़ी मुसीबत
में फँस गया हूँ। क्योंकि पलिश्ती मुझसे
लड़ाई कर रहे हैं। प्रभु ने मुझे छोड़ दिया
है। वह किसी भी तरीके से मुझे कोई जवाब
नहीं दे रहे हैं। तुम को बुलाने का मक्सद
यह है कि तुम मुझे बताओ कि मुझे करना
क्या चाहिए। 16 शमूएल ने कहा, “जब प्रभु
तुम्हारे दुश्मन बन चुके है, वह मुझ से क्यों
पूछ रहे हो ? 17 प्रभु ने मेरे मुँह से जो कुछ
कहलवाा था, वैसा ही किया है। मतलब
यह है कि तुम्हारे हाथ से राज्य छीनकर
दाऊद को दे दिया है। 18 अमालेकियों के
खिलाफ़ प्रभु के तेज गुस्से के मुताबिक तुमने
नहीं किया। इसलिए आज तुम्हारे साथ प्रभु
का यह व्यवहार है। 19 प्रभु परमेश्वर तुम्हें
इस्राएलियों के साथ पलिश्तियों को सुपुर्द
कर देंगे। कल, अपने बेटों के साथ तुम
मेरे साथ ही होगे। 20 यह सब सुनकर डर
की वजह से शाऊल ज़मीन पर मुँह के बल
गिर पड़ा। उसने पूरे दिन रातखाना भी नहीं
खाया, जिस से उसे बड़ी कमज़ोरी महसूस
हुई। 21 त बवह महिला शाऊल के पास
गई। उसने शाऊल को बहुत परेशान देखा।
उसने कहा, “देखो, अपनी जान हथेली पर
रखकर, तुम्हारी बातों को सुना था। 22 मेरी
बिनती यह है कि, एक टुकड़ा रोटी खा लो,
ताकि कुछ ताकत आ जाए और तुम जा
सको।” 23 शाऊल बोला,“नहीं मैं कुछ नहीं
खाऊँगा।” सेवकों और महिला के दबाव में
आकर शाऊल चारपाई पर बैठ गया। 24 स्त्री
ने खाना बनाकर परोसा और उन्हें दिया।
25 शाऊल और उसके सेवक खाना खा कर
उसी रात वहाँ से चल दिए।

29 पलिश्तियों ने अपनी फौज को
अपेक में इकट्ठा किया। उसी समय
इस्राएली यिज़्रेल के पास डेरे डाले हुए थे।
2 पलिश्तियों के सरदार अपने दल के साथ
आगे चल दिए। फौज के पीछे आकीश साथ
दाऊद अपने साथियों के साथ आगे बढ़ा।
3 पलिश्ती हाकिमों ने पूछा, “ये इब्री लोग
यहाँ। क्या कर रहे हैं?” आकीश बोला,
“क्या वह इस्राएल के राजा शाऊल का
कर्मचारी नहीं है, जो बहुत सालों से मेरे साथ
रहता है। जब से वह भाग कर यहाँ आया
है, मैंने उसमें कोई बुराई नहीं देखी है।”
4 तब पलिश्ती हाकिम उसे से नाराज होते
हुए बोले, “उस आदमी को लौटा दो, ताकि
वह उस जगह जाए जिस तुमने उसे लिए
ठहराया है। हमारे साथ वह युद्ध में ने आए,
कहीं वह हमारी खिलाफ़त न करने लगे। फिर
वह अपने मालिक से किस तरह मेल कर
पाएगा ? क्या वह लोगों के सिर कटवाकर
ऐसा न करेगा ?” 5 क्या यह वही दाऊद नहीं
है, जिसके बारे में नाचते गाते लोग कह रहे
थे। शाऊल ने हज़ारों को, लेकिन दाऊद ने
लाों को मारा ?” 6 तब आकीश ने दाऊद
को अपने पास बुलाया और कहा, “तुम
तो सीधे-सादे आदमी हो। फौज में तुम्हारा
योगदान भी मुझे मंज़ूर है। अब तक मैंने तुम में
कोई बुराई नहीं पायी है, लेकिन सरदार लोग

तुम्हें नहीं चाहते हैं। 7 इसलिए तुम वापस
चले जाओ, कही पलिश्ती सरदार तुम से
नाखुश न हो जाएँ।" 8 दाऊद का उत्तर था,
"मैंने क्या किया है, ऐसी क्या बात है, कि
मैं आपके दुश्मनों से लड़ नहीं सकता ?"
9 आकीश बोला, "इसमें कोई शक नहीं है
कि तुम मेरी निगाह में एक दूत की तरह हो।
फिर भी पलिश्ती प्रमुख योद्धाओं का कहना
है, कि दाऊद को हम साथ में नहीं लेगे।
10 इसलिए अपने साथियों के साथ कल बहुत
सवेरे चले जाना।" 11 अगले दिन दाऊद ने
वैसा ही किया और पलिश्ती यिज्रेल को चढ़
आए।

30 अपने साथियों के साथ दाऊद तीसरे
दिन जब सिकलग पहुँचा, तो देखा
कि अमालेकियों ने दक्षिण क्षेत्र और सिकलग
पर हमला किया है। 2 वे लोग वहाँ की
महिलाओं और बच्चों को भी कैद करके ले
गए। 3 जब दाऊद उस नगर में पहुँचा, तब
नगर जला पड़ा था और महिलाएँ तथा बच्चे
नहीं थे। 4 तब दाऊद और उसके साथ चिल्ला
-चिल्ला कर रोए और थक गए। 5 दाऊद की
दोनों पत्नियाँः अहीनोअम और अबीगैल भी
बन्दी बना कर ले जायी गई थीं। 6 दाऊद बड़ी
मुसीबत में पड़ गया था, क्योंकि लोग उसे
पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे।लेकिन
दाऊद ने याहवे को याद करके हिम्मत
जुटाई। 7 तब दाऊद ने अहीमेलेक के बेटे
एब्यातार, पुरोहित से एपोद लाने को कहा।
8 तब दाऊद ने प्रभु से पूछा, "क्या मैं दुश्मन
का पीछा करके पकड़ लूँगा?" प्रभु ने कहा,
"हाँ तुम सब कुछ वापस छुड़ा भी लाओगे।"
9 अपने छैः सौ साथियों के साथ दाऊद बसोर
नामक नाले तक गया। वहाँ कुछ लोग छोड़े
गए। 10 दाऊद चार सौ के साथ पीछा करने
गया, क्योंकि दो सौ थक कर चूर हो चुके थे
और बसोर नाले के पार न जा सके, वे वहीं
है। 11 मैदान में उन्हें एक मिस्री मिला। वे उसे
दाऊद के पास ले गए और उसे खाना दिया
और पानी पिलाया। 12 उसे अंजीर का टुकड़ा
ओर किशमिश भी दी। वह तीन दिन-तीन
रात से भूखा था। खाते ही उसके जी में जी
आ गया। 13 दाऊद ने उससे सवाल किया,
"तुम किस के जन हो, और कहाँ से आए
हो ? उसने कहा,"मैं मिस्री हूँ और एक
अमालेकी का दास हूँ। तीन दिन पहले मैं
बीमार पड़ गया था। तभी मेरे मालिक ने मुझे
यहाँ छोड़ दिया। 14 हम लोगों ने करेतियों
की दक्षिण दिशा में, यहूदा के देश में, और
कालेब के दक्षिण दिशा में हमला किया
और सिकलग को जला डाला।" 15 दाऊद
ने प्रश्न किया, "क्या तुम मुझे उन लोगों
तक पहुँचा सकोगे?" वह बोला, "तुम यह
वायदा करो, कि तुम मेरी जान नहीं लोगे
और न मेरे मालिक के सुपुर्द करोगे, तब
तो मैं तुम्हें उन तक पहुँचा दूँगा। 16 वहाँ
तक उनको पहुँचा देने पर देखने में आया
कि पलिश्तियों की लूट को और यहूदा की
लूट को लाकर वे खुशी मना रहे थें और
खा-पी रहे थे। 17 इसलिए दाऊद उन्हें रात के
पहले पहर से, दूसरे दिन की शाम तक मारता
रहा। चार सौ जवानों को छोड़, जो ऊँटों पर
चढ़कर भाग गए थे, उन में से एक आदमी
भी न बचा। 18 अमालेकी लोग जो कुछ ले
गए थे, वह सब दाऊद वापस ले आया।
वह अपनी दोनों पत्नियों को भी वापस ले
आया। 19 छोटे-बड़े, बेटियाँ, लूट का सामान,
जो कुछ भी अमालेकी ले गए थे, वह सब
ले आया। 20 सारे जानवर भी वह वापस ले
आया। जो लोग इन जानवरों को हाँकते हुए
लाए, कह रहे थे "यह दाऊद की लूट है।"

21 तब दाऊद उन दौ सो आदमियों के पास
आया जो थक जाने के कारण दाऊद के साथ
न जा सके थे और बसोर नाले के पास छोड़
दिए गए थे। वे दाऊद और उसके साथियों
से मिलने चले। दाऊद ने उनका हाल-चाल
पूछा। 22 तब दाऊद के संग गए हुए लोगों में
से दुष्ट और लुच्चे लोगों ने कहा,“इसलिए
कि वे लोग हमारे साथ नहीं आए थे, हम
लूट के सामान में से उन्हें कुछ नहीं देंगे। वे
लोग केवल अपनी-अपनी पत्नी और बच्चे
ले जाएँ।” 23 तुरन्त दाऊद बोल उठा,” मेरे
भाईयो, हमें जो कुछ याहवे ने दिया है, उसमें
स्वार्थी नहीं होना चाहिये। प्रभु ने हमारी
रक्षा की। हमारे हमलावरों को हमारे हाथ
कर दिया। 24 इस विषय पर कौन तुम्हारी
सुनेगा, क्योंकि युद्ध में जानेवाले को जितना
हिस्सा मिलता है उतना ही सामा के पास
बैठनेवाले को मिलता है। जितना हिस्सा
युद्ध में जाने वालों का है, उतना ही सामान
के पास बैठने वालों का हिस्सा है। 25 उस
दिन से यह नियम चालू हो गया और वह
लम्बे समय तक रहा। 26 दाऊद के सिकलग
पहुँचने पर लूट में से कुछ हिस्सा उसने यहूदा
के प्राचीनों के पास जो उसके दोस्त थे,
इस समाचार के साथ भेजा,“देखो याहवे के
दुश्मनों से लूटे हुए माल में से यह तुम्हारे लिए
ईनाम है।” 27 अर्थात उन जगहों के प्राचीनों
और दोस्तों का हिस्सा जो बेतेल, नेगेव के
रामोत, यत्तीर, 28 अरोएर, सिपमोत, एश्तमो,
29 राकाल, यरहमेलियों के नगरों, केनियों के
नगरों, 30 होरमा, बोराशान,अताक, 31 हेब्रोन
आदि स्थानों में रहते थे, जहाँ स्वयं दाऊद
और उसके साथी आया जाया करते थे।

31 पलिश्तियों ने इस्राएलियों से युद्ध
किया और इस्राएली भाग खड़े हुए
और गिलबो पहाड़ पर मारे गए। 2 शाऊल
और उसके बेटों के पीछे पलिश्ती पड़े
रहे। उन्होंने शाऊल उसके बेटों, योनातान,
अबीनदाब और महकीश को मार दिया।
3 शाऊल के साथ जबरदस्त लड़ाई छिड़ी हुई
थी। धनुष धारण करने वाले लोगों ने उसे
घेर लिया। इसलिए वह परेशान हो गया था।
4 तब शाऊल ने अपने हथियार उठाने वाले
से कहा,“अपनी तलवार से मुझे मार डालो,
ताकि ऐसा न हो कि जीवित प्रभु को न मानने
वाले मुझे मार डालें।” लेकिन वह हथियार
ढोने वाला बोला, नहीं। तब शाऊल ने खुद
खड़ी तलवार पर गिर कर आत्म हत्या कर
ली। 5 यह देखकर कि शाऊल ने आत्म हत्या
कर ली है, उसने भी अपनी जान ले ली।
6 इस तरह एक ही दिन में शाऊल, उसके
बेटे और उसका हथियार उठाने वाला खत्म
हो गए। 7 यह सभी देखकर तराई के दूसरी
ओर वाले तथा यरदन नदी के पार रहने वाले
इस्राएली भी अपने -अपने नगर को छोड़
भाग गए। उन नगरों में पलिश्ती आने लगे।
8 दूसरे दिन जब पलिश्ती सामान को लूटने
आए, तो उन्हें शाऊल और उसके बेटों के
शव मिले। 9 तब उन लोगों ने शाऊल का
सिर काट लिया, हथियार ज़ब्त कर लिए।
पलिश्ती देश के सभी इलाकों में सन्देश भेजा
ताकि देवताओं के मन्दिरों और बाकी लोगों
में यह समाचार फैल जाए। 10 तब उन्होंने
उसके हथियार अश्तोरेत देवियों के मन्दिर
में रखे। शाऊल के शव को बेतशान की शहर
पनाह में जड़ दिया। 11 गिलाद वाले याबेश
निवासियों को मालूम पड़ा। कि पलिश्तियों
ने शाऊल के साथ क्या -क्या किया। 12 तब
सभी बहादुर उठे और चल पड़े। रात ही
में जाकर वे बेतशान से शाऊल और उसके
के बेटों के शव याबेश ले आए और जला

दिए। 13 उनकी हड्डियाँ याबेश में झाऊ पेड़ के नीचे गाड़ दीं। उन्होंने सात दिन तक कुछ न खाया।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com